## सर्वसमवृत्र प्रभावः

Sarvasamanaya C. Venkalanamanaya

#### अयं ग्रन्थः

निवृत्तमहीशूरेदेशीयसंस्कृतशालोपद्रष्टृपदेन चेन्नरायपत्तनाभिजनेन

श्रीवङ्कटरमणार्येण

8459

विराचितः



Santih



मैसूरु राजकीयशाखामुद्रालये सम्मुद्रितः १९३८ 

# Opinion by Mahamahopadhyaya Arthasastravisarada, Vidyalankara Panditaraja Dr. R. Shamasastry.

I read with great pleasure a few of Mr. C. Venkataramanaya's manifold Sanskrit works both in verse and prose: The Navagitakusumanjali, religious lyrics, the Umadarsa, a Sanskrit translation in verse, of Mr. K. A. Krishnaswami Iyer's English Poetry entitled "Uma's Mirror," the Stutikusumanjali, hymns in praise of Gods and Goddesses, the Samavrittaprabhava, a work on Sanskrit metre, the Kamalvijava, a drama in five Acts or Lord Tennyson's "the Cup" rendered in Sanskrit. Mr. Venkataramanaya's style is simple and dignified, and diction sweet and elegant, his verses, to illustrate the various Sanskrit metres, are all charming and the last chapter on the process of calculating the number of various metres of various Gana-syllables is more lucid than Kedara's Prastara in his Vrittaratnakara. I think that the brilliant Oriental dress in which our poet has clothed Tennyson's drama is more attractive to the East than the original.

May God bless the poet to give us many more of his charming literary pieces.

Mysore, 11th August 1938. (Sd.) R. SHAMASASTRY.

## अभिमतम्

विदितमेवैतत्समेषां विदुषां, यत्किल '' छन्दः पादौ तु वेदस्ये '' त्यादिना वेदमहापुरुषस्य छन्दरशास्त्रं प्रतिष्ठासाधनपादरूपमिति । छन्दांसि विना ऋचः कथं प्रतिष्ठां रुभेरन् ? यतः बहुचब्राह्मणे गाय-ज्यादिछन्दसां वेदनपुरस्सरं अनुष्ठातुः फलविशेषाः पदिशताः, तथाहि — '' तेजो वै ब्रह्मवर्चसं गायत्री, उष्णिहा वाऽऽयुष्कामः कुर्वीत, अनु-ष्ट्रभो स्वर्गकामः, बृहत्यो श्रीकामः, यशस्कामः, तृष्टुभौ वीर्यकामः, जगत्यौ पशुकाम विराजावन्नाचकामः, कुवितेति "। "विराट्छन्दसा याज्यानुवाक्ये विधातुकामस्य सर्वेषां छन्दसां सायुज्यं सरूपतां सलो-कतामश्रुते, य एवं विद्वान् विराजौ कुरुते । " इत्यादिना । अत एव तत्तनमन्नाणां ऋषिछन्दःपरिज्ञानाभावेन कर्माण्यनुतिष्ठतः महाननर्थो दर्शितः निरुक्तशास्त्रे । "यो ह वा अविदितार्षेयछन्दे।दैवतब्राह्मणेन मम्रेण याजयति वाऽऽध्यापयति वा स्थाणुं वर्छति गर्ते वा पात्यते पापीयान् भवतीति । " तैत्तरीयब्राह्मणेऽपि "गायत्रीभिर्क्राह्मणस्याऽऽ-दध्यात् , तृष्टुभीराजन्यस्य जगतीभिवैदयस्येत्यादि । लोकेऽपि पिङ्गल-नागः वैदिकछन्दांस्यवलंब्य लौकिकवृत्तानि, वंशस्थ-रुचिरा-रथी-द्धता-मालिनी-स्रग्द्धरादीन्यास्त्रयामास । तेषां सूत्राणां भाष्यादिग्रन्थाः विस्तृता विरला इति, केदारान्तर्वाणिः वृत्तरन्ताकरं नाम प्रकरणग्रन्थं निर्ममे । छन्दोविचितिर्नाम कश्चन ग्रन्थः दण्डिना निरमायीति श्रूयते। छन्दोमञ्जरीत्यादयः त्रिचतुराः प्रन्थाः वृत्तस्वरूपावेदकाः प्रसिद्धाः । इतरशास्त्रवादिदं छन्दरशास्त्रं बहुभिस्त्र्रिभिर्विवरणाय न प्रकान्तं । तदेतत्सर्वमालक्ष्य, कल्याणनगरस्थैर्विश्रान्तसंस्कृतसर्वशालाध्यक्षेः चन्नरायपत्तनाभिजनैः वेक्कटरमणार्थेः वृत्तरलाकरोक्तमार्गेण तदीयस्त्राण्यालंक्य,
सर्वेषां वृत्तानां बहून्युदाहरणानि कालानुगुण्येन मन्दजनोहिधार्षया
स्वप्रतिभया विरचय्य अस्मिन् प्रन्थे संयोजितानि । मयाप्याम्रुलाप्रमवलोकितानि, परिष्कृतानि च मुद्रणकार्याय । लौकिकानां छन्दसां
म य र सादीनां गणानां च अभिमानिन्यः देवताः लक्ष्म्यापादनादि
कार्य, च 'मो भूमिस्रिगुरुः श्रियं वितनुते, भद्र पूर्वगुश्चन्द्रमाः'
इत्यादिना स्फुटीकृतम् । एतद्र्न्थावलोकनेन विद्यार्थिनः महत्तरफलं
लभेरन् इति मन्ये। वृत्तरलाकरग्रन्थप्रदर्शितप्रस्तारादिकमापेक्षया अस्मिन्
प्रन्थे प्रतिपादितप्रस्तारपदकसंख्यानिर्णयादितन्नाणि विद्यार्थिनामनायासेन
साहाय्यमाचरन्ति । विद्वद्वराश्च परिशील्येमं प्रन्थं अमन्दानन्दमधिगच्छन्तीति शम् ॥

मैस्रुरु, साहित्यरत्नम् अलङ्काररक्षामणिः
१०-८-१९३८ महाविद्वान् के. गोपालकृष्णशास्त्री,
मैस्रुरु विश्वविद्यालय संस्कृतपण्डितः.

#### ANNOUNCEMENT.

Copyright of this work is not reserved by the author, as the work is solely intended for the general enlightenment. So, if more copies are required at any time, any individual or agency may get the work re-printed in any number of copies, without claiming copy-right to the work. If, however, a commentary in Sanskrit, or notes, or translation in any language is written on, and affixed to the work, then copy-right may, justly and rightly, be claimed and reserved by any individual or by any Educational Institution or by any other agency.

Mysore, C. VENKATARAMANAIYA, Author.

#### INDEBTEDNESS.

I am greatly indebted to the Government of His Highness the Maharaja of Mysore for kindly showing to me some concession in getting my Sanskrit works printed at half the cost in the Government Branch Press, Mysore, and also to the Government Branch Press, Mysore, for expediting the printing of the work and neat get up.

Mysore, C. VENKATARAMANAIYA, Author.

#### प्रकटनम्

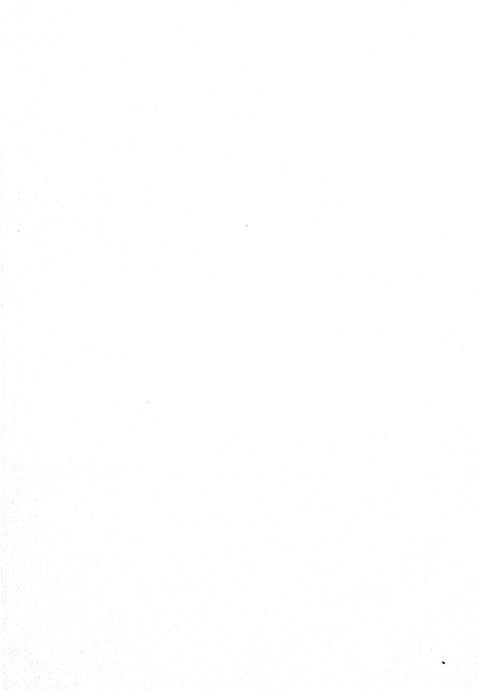
एतद्रन्थसंबन्धाधिकारः कोऽपि ग्रन्थकर्त्रा न स्वायत्ती-कृतः । तस्माद्यदा कदावाऽप्यधिकानि पुस्तकान्यपेक्षितानि भवन्ति, तदा यस्य कस्य वा एतनाटकस्य पुनर्भुद्रणकार्ये भवति निर्गालोऽधिकारः । परन्तु ग्रन्थस्य स्वायत्तीकरणे न तस्याधि-कारः । तथाप्ययं ग्रन्थः, व्याख्यासमेतो वा विवरणसहकृतो वा भाषान्तरपरिवर्तनपरिष्कृतो वा यदि भवेत्, तदा तद्याख्यादि-कर्तुः, तत्प्रतिनिधः, विश्वविद्यापीठादेः, कस्य वा तदितरसमा-जादेः, तादशव्याख्याद्यपेतस्यास्य ग्रन्थस्य न्यायतः स्वायत्ती-करणपूर्वकमेव सर्वे ग्रुद्रणाद्यधिकाराः निश्विताः ग्रन्थकर्तृसम्म-ताश्च भवन्ति ।।

मैस्र्रुः, ३-७-१९३८. श्री. वेङ्कटरमणार्यः, प्रन्थकर्ताः

#### कृत ज्ञता

समयेऽस्मिन् एतद्वन्थसंशोधनादिकार्ये साहाय्यमाच-रितवतां श्रीमन्महीशूरमहाराजस्य आस्थानमहाविदुषां साहित्य-रत्नम् अलङ्काररक्षामाणिः इत्यादिविरुदाङ्कितानां कन्नंबाडि गोपालकृष्णशास्त्रिणां, ग्रुद्रणकाले अक्षरस्वलनादिदोषशोधना-दिकार्ये सहायभूतानां आस्थानविदुषां सोसले कृष्षस्वामिशा-स्त्रिणां, सदसब्रक्तिपूर्वकं स्वाभिमतप्रदर्शकानां विमर्शकानां च कृतज्ञो भूत्वा सप्रश्रयमभिवन्दनसन्ततिम् समर्पये।।

मैसूरु, ६-७-१९३८. श्री. वेङ्कटरमणार्थः, व्रन्थकर्ताः



## विषयस् चिका

| संख्या | छन्दः       |         | वृत्तम्    |      | पुरम् |
|--------|-------------|---------|------------|------|-------|
| १      | उक्ता       | ••••    | श्रीः      | •••• | 1     |
| ર      | अत्युक्ता   | • • • • | स्त्री     | •••• | 1     |
| રૂ     | मध्यमा      | • • • • | नारी       |      | 2     |
|        | 99          | ****    | सृगी       | **** | 2     |
|        | 3.5         | ****    | यगणवृत्तम् | •••• | 2     |
|        | 72          | • • • • | ₹ "        | •••• | 2     |
|        | 59          | ••••    | त ,,       |      | 2     |
|        | 95          | ••••    | ₹ ,,       |      | 2     |
|        | " "         | ••••    | भ ,,       | •••• | 2     |
|        | 97          | ••••    | ন ,,       |      | 2     |
|        | "           | ••••    | स ,,       | •••• | 2     |
|        | 25          | ••••    | म ,,       | •••• | 2     |
| ક      | प्रतिष्ठा   | ••••    | कन्या      | •••• | 3     |
| 18     | सुप्रतिष्ठा | ••••    | पङ्किः     | •••• | 3     |
| દ      | गायत्री     | ••••    | तनुमध्या   | •••• | 3     |
|        | ,,          |         | शशिवदना    |      | 3     |
|        | 3)          | ****    | वसुमती     |      | 4     |
|        | 55          | ••••    | विद्युहेखा |      | 4     |
|        | 52          |         | सोमराजी    | •••• | 4     |
| O      | उष्णिक्     | ••••    | मदलेखा     | **** | 4     |
|        | 5,5         |         | मधुमती     | •••• | 5     |
|        | ,,          |         | कुमारललिता | •••• | 5     |
|        | 55          | •••     | हंसमाला    |      | 5     |
| s      | •           | ix      |            | b    |       |

| संख्या | छन्द:      |      | वृत्तम्        |       | पुटम् |
|--------|------------|------|----------------|-------|-------|
| 6      | अनुष्टुप्  | ,,,, | चित्रपदा       |       | . 5   |
|        | 99         | •••• | विद्युन्माला   | •     | . 6   |
|        | 29         | •••• | माणवकम्        | •••   | . 6   |
|        | 39         | •••• | हंसरुतम्       | •••   | . 6   |
|        | 29         | •••• | समानिका        | •••   | . 6   |
|        | "          | **** | प्रमाणिका      | •••   | . 6   |
|        | 9,9        | •••• | वितानम्        | •••   | . 7   |
|        | 35         | •••• | नाराचिका       | • • • | . 7   |
|        |            | •••• | क्वरी          | •••   | . 7   |
|        | 33         | **** | <b>ऋोकः</b>    | •••   | . 7   |
|        | 5)         | ***  | गजगतिः         | •••   | . 8   |
| 9      | बृहती      | •••• | हलमुखी         | • • • | . 8   |
|        | > 9        | **** | भुजङ्गशिशुसृता | •••   | . 8   |
|        | 7,1        | •••• | भुजङ्गसङ्गता   | •••   | . 8   |
|        | 71         | •••• | मणिमध्यम्      | •••   | . 8   |
| १०     | पङ्किः     | •••• | सुमुखी         |       | 9     |
|        | 55         |      | गुद्धविराद्    | •••   | 9     |
|        | 55         | **** | पणवम्          |       | 10    |
|        | , ,,,      | •••• | मयूरसारिणी     | •••   | 10    |
|        | "          | •••• | रुक्मवती       |       | 10    |
|        | ,,         | •••• | मचा            | •••   | 10    |
|        | 23         | •••• | मनोरमा         |       | 11    |
|        | , ,,       |      | चम्पकमाला      | ***   | 11    |
|        | "          | •••• | त्वरितगतिः     |       | 11    |
| ११     | त्रिष्टुप् |      | उपस्थिता       | ••••  | 11    |
|        | 55         | •••• | इन्द्रवज्रा    | ••••  | 12    |
|        | 75         |      | उपेन्द्रवज्रा  | ••••  | 12    |
|        | 55         | •••  | उपजातिः        | ••••  | 12    |

| संख्या | छन्दः                                     |      |     | वृत्तम्              |      | पुरम् |
|--------|---|------|-----|----------------------|------|-------|
|        | त्रिष्टुप्                                | •••  | ••  | सुमुखी               | **** | 13    |
|        | 5,9                                       | **   | ••  | दोधकम्               |      | 13    |
|        | <b>)</b> ]                                |      |     | शालिनी               |      | 13    |
|        | · . ,                                     |      |     | वातोर्मी             | **** | 14    |
|        | <b>,</b> 1                                | * ** | ••  | भ्रमरविलसितम्        | **** | 14    |
|        | 1.5                                       | ••   |     | रथोद्धता             | **** | 14    |
|        | 99  | ••   | ••  | स्वागतम्             |      | 14    |
|        | 12  | •••  | ••  | वृत्ता               | •••• | 15    |
|        | 93  | ••   | ••  | पृथ्वी               | **** | 16    |
|        | 511                                       | ••   |     | भद्रिका              | •••• | 16    |
|        | , 2                                       | •••  | ••  | चित्रवृत्ता          |      | 16    |
|        | 19  | ••   | ••  | <b>इ</b> येनिका      | •••• | 16    |
|        | 25  | ••   |     | मौक्तिकमाला          | •••• | 17    |
|        | 95  | ••   | •   | श्रीवृत्तम्          | •••• | 17    |
|        | 99  | ••   | ••  | उपस्थिता             | •••• | 17    |
|        | ,,  | •    |     | सम्मता               | •••• | 18    |
|        | 99  |      |     | कुमारी               | **** | 18    |
| १२     | जगती                                      |      |     | चन्द्रचर्त्मा        | **** | 18    |
|        | 5)  |      |     | वंशस्थम्             | •••• | 18    |
|        | ,,  |      |     | इन्द्रवंशा           |      | 19    |
|        | 22  |      |     | <b>उपजातिः</b>       |      | 19    |
|        | 55  |      |     | तोटकम्               |      | 20    |
|        |   |      |     | <b>हुतविलंबितम्</b>  |      | 21    |
|        | <b>55</b>                                 |      |     | पुटः                 |      | 21    |
|        | 92  |      |     | प्रमुदितवदना         |      | 21    |
|        | "   |      |     | <b>कुसुमविचित्रा</b> | •••• | 21    |
|        | ,,, ,,,<br>,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, |      | ••  | जलोद्धतगीतः          |      | 22    |
|        | 52  |      | •   | भुजङ्गप्रयातम्       | •••• | 23    |
|        | "   |      | • • | 323241612            | **** | 40    |

| संख्या | छन्दः       |      | वृत्तम्        |      | पुटम् |
|--------|-------------|------|----------------|------|-------|
|        | जगती        |      | स्रग्विणी      | •••• | 23    |
|        | 25          | •••• | प्रियंवदा      |      | 23    |
|        | <b>,</b> 55 |      | मणिमाला        | •••• | 23    |
|        | 99          | •••• | <b>लिलता</b>   | •••• | 24    |
|        | <b>7</b> 9  | •••• | प्रमिताक्षरा   | •••• | 24    |
|        | 59          | •••• | ज्वाला         |      | 24    |
|        | 29          | •••• | वैश्वदेवी      | •••• | 25    |
|        | >9          | **** | जलधरमाला       |      | 25    |
|        | 23          | **** | अभिनवभालिका    | •••• | 25    |
|        | 25          | •••• | प्रभा          | •••• | 25    |
|        | 55          | •••• | मानिनी         | •••• | 26    |
|        | 55          | **** | अभिनवतामरसम्   | •••• | 26    |
|        | 99          |      | गौरी           | •••• | 26    |
|        | 99          | •••• | <b>ललना</b>    | •••• | 27    |
|        | 99          | •••• | <b>ल्लितम्</b> |      | 27    |
|        | 5)          | ·    | मौक्तिकमाला    |      | 27    |
|        | 33          | •••  | कोकरता         | •••• | 27    |
| १३     | अतिजगती     | •••• | चञ्चरीकावली    |      | 28    |
|        | 92          | •••• | क्षमा          | •••• | 28    |
|        | 29          | •••• | प्रहर्षिणी     | •••• | 28    |
|        | 5)          | •••• | मत्तमयूरम्     | •••• | 28    |
|        | <b>9</b> 9  | **** | रुचिरा         | •••• | 29    |
|        | 99          | •••• | मञ्जभाषिणी     | •••• | 29    |
|        | 35          | **** | सरसा           | •••• | 29    |
|        | <b>37</b>   | •••• | सुमङ्गलिका     | •••• | 29    |
|        | ,,          | •••• | प्रभद्रकम्     | •••• | 30    |
| १४     | शकरी        | •••• | असंवाधा        | •••• | 30    |
|        | 33          | **** | अपराजिता       | •••• | 30    |

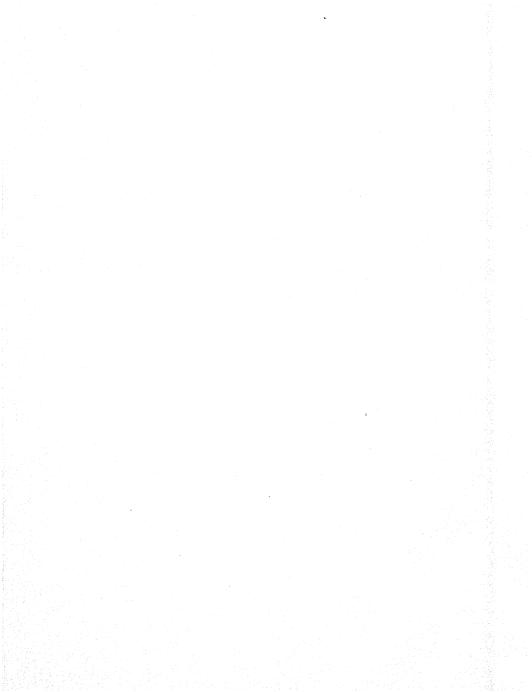
## xiii

| संख्या | छन्दः           |   | वृत्तम्                    |           | पुटम् |
|--------|-----------------|---|----------------------------|-----------|-------|
|        | शकरी            | ••••                                    | वसन्ततिलका                 |           | 31    |
|        | 5)              | ****                                    | प्रहरणतिलका                |           | 31    |
|        | 99              |   | इन्दुवद्ना                 | ••••      | 31    |
|        | 99              | ****                                    | अलोला                      | • • • • • | 31    |
|        | "               | • | कुमारी                     | • • • •   | 32    |
|        | 99              |   | मञ्जुभाषिणी                | ••••      | 32    |
|        | 25              | ****                                    | <b>युकेसरम्</b>            |           | 32    |
|        | 9,9             | ****                                    | मद्नार्ता                  | ••••      | 33    |
|        | ,,              |   | पथ्या                      |           | 33    |
|        | ,,              | ****                                    | प्रमदा                     |           | 34    |
|        | 9.9             |   | मध्यक्षामा                 | • • • •   | 34    |
|        | <b>&gt;</b>     |   | वासन्ती                    |           | 34    |
| १५     | अतिराकरी        | ••••                                    | <b>लीला</b> बेला           |           | 35    |
|        | ,,              | ••••                                    | तूर्णकम्                   | ••••      | 35    |
|        | 29              | ••••                                    | शशिकला                     |           | 35    |
|        | 99              | ****                                    | स्रक्                      |           | 35    |
|        | 55              | ****                                    | मणिगुणनिकरः                |           | 36    |
|        | 3)              | ****                                    | मालिनी                     |           | 36    |
|        | <b>5</b> 5      |   | चन्द्रलेखा                 |           | 37    |
| १६     | ''<br>अष्टिः    |   | <b>वृषभगतिविलसितम्</b>     | 37        | -38   |
|        | ,,              |   | अश्वगतिः                   |           | 38    |
|        |                 |   | पञ्चचामरः                  |           | 38    |
|        | 21              | ••••                                    | गुणभूषा                    | 38        | -39   |
|        | <b>99</b>       |   | वाणिनी<br>वाणिनी           |           | 40    |
| १७     | ,,<br>अत्यष्टिः |   | दाानात<br><b>द्याचरिणी</b> | ••••      | 40    |
| 7.3    |                 | ••••                                    | पृथ्वी                     | ••••      | 40    |
|        | <b>99</b>       |   | पृथ्वा<br>वंशपत्रपतितम्    | ••••      | 41    |
|        | <b>29</b>       |   |                            | ••••      |       |
|        | 1)              | ****                                    | मन्दाकान्ता                | ••••      | 41    |

#### xiv

| संख्या | छन्दः      |         | वृत्तम्            |                | पुटम् |
|--------|------------|---------|--------------------|----------------|-------|
|        | अत्यष्टिः  | ••••    | हरिवृत्तम्         |                | 41    |
|        | 55         | ••••    | नत्कुटकम्          | ****           | 42    |
|        | . 55       |         | कोकिलकम्           | ****           | 42    |
|        | 29         | ••••    | चित्रलेखा          | ••••           | 42    |
| १८     | धृतिः      | ••••    | हरिचङ्कमा          | ****           | 43    |
| . •    | 32<br>32   | + * * * | हरिणयुतम्          | ••••           | 43    |
|        | "          |         | (निशा सुधा-नाराच   | <b>प्</b> ) 43 | -44   |
|        | 95         | ••••    | करिणी              | ••••           | 44    |
|        | 77         | ••••    | कुसुमितलतावेल्लता  | · · · · ·      | 44    |
|        | 93         |         | हरनर्तकम्          | ••••           | 44    |
|        | 7,7        | ••••    | चित्रलेखा          |                | 45    |
|        | 15         | ****    | नन्दनम्            | ****           | 45    |
|        | 95         | ••••    | शार्दूलललितम्      |                | 45    |
| १९     | अतिधृतिः   | ••••    | मेघविस्फूर्जितम्   | ••••           | 46    |
|        | 25         | ****    | शार्वूलविक्रीडितम् | ****           | 46    |
|        | ,,         |         | मणिदीप्तिः         | . * * * *      | 46    |
|        | ,,         | ****    | वाणी               | ****           | 47    |
|        | ,,,        |         | सुमधुरा            |                | 47    |
|        | >1         |         | सुरसा              | ••••           | 47    |
| २०     | कृतिः      | ••••    | वृत्तम्            | 47             | -48   |
|        | 99         | ••••    | सुवद्ना            | ••••           | 48    |
|        | 99         | ••••    | गीतिका             | ****           | 48    |
| २१     | प्रकृतिः   |         | स्रग्धरा           | 48             | -49   |
|        | 21         | ••••    | पश्चकावली          | ****           | 49    |
| २१     | आकृतिः     | ••••    | मद्रकम्            |                | 49    |
|        | <b>5</b> ) | ••••    | हंसी               | 49             | -50   |
|        | <b>5</b> 5 |         | मत्तेभम्           | ****           | 50    |
|        | 25         | ****    | लक्ष्मीः           | ****           | 50    |

| संख्या | छन्द:         |      | वृत्तम्          |      | पुटम् |
|--------|---------------|------|------------------|------|-------|
| २३     | विकृतिः       |      | मत्ताक्रीडा      | •••• | 51    |
|        | 29            | •••  | अद्भितनया        | •••• | 51    |
|        | 99            | •••• | अश्वलितम         | 51   | -52   |
| રક     | संकृतिः       | •••• | तन्वी            | •••• | 52    |
|        | 32            | **** | अश्वलितम्        | •••• | 52    |
| २५     | "<br>अभिकृतिः | •    | कौञ्चपदम्        | **** | 53    |
| २६     | उत्कृतिः      | *    | भुजङ्गविजृंभितम् |      | 53    |
|        | 99            | •••• | अपवाहकः          | 53   | -54   |
|        |               |      | शंभनटनम्         | **** | 54    |



#### उपोद्धातः

#### वाचां प्रभावः-

१ लोकेऽस्मिन् वागेव खलु सर्वव्यवहारहेतुर्मनुष्याणां। स<sup>1</sup> च वर्णात्मिका व्यक्तध्वनिप्रधाना। वर्णाश्च स्वराः नव, व्यञ्जनानि त्रयस्त्रिशदिति द्वाचत्वारिंशत्संख्याकाः। वर्णसमुदायः पदं। तिङन्त-पदरिहतपदसमूहः पदकदम्बकम्। उक्तं वा अध्याहृतं वा तिङन्तपदं, तत्सिहतपदसमूहः वाक्यं। तच्च वाक्यं द्विविधं छन्दोनिबद्धात्मकं तद-निबद्धात्मकं चेति। वैदिकग्रन्थेषु सर्वे मन्त्राः सर्वो ऋचः छन्दोन्निबद्धाः।यजुरादीनि छन्दोऽनिबद्धानि। तथैव ब्राह्मणानि, आरण्यकानि, उपनिषदश्च प्रायः। सूत्रग्रन्थास्सर्वे, तद्भाष्यटीकादयश्च वाक्यरूपा एव। लोकिकग्रन्थेषु वृत्तनिबद्धानि पद्यानि, तदनिबद्धानि गद्यानि, वचनात्मकानि। स्मृतिपुराणकाव्यादयो ग्रन्थाः वृत्तबद्धाः। कथाकाद-म्बर्यादयः केवळवाक्यरूपाः॥

#### छन्दोमाहात्म्यम्-

२ 'पुरुषस्य पापसम्बन्धं वारायितुमाच्छादकत्वाच्छन्दः। चीयमानामिसन्तापस्याऽऽच्छादकत्वाच्छन्दः। अपमृत्युं वारायितुमा-च्छादयतीति छन्दः ' इति छन्दरशब्दो व्युत्पादितः। वेदाङ्गान्यतमं छन्दः वेदपुरुषस्य पादस्थानीयं। यथा पादसहायमन्तरेण सर्वी गमनादिव्यवहारः न सम्पद्यते, तथा छन्दस्सहायमन्तरेण वेदपुरुषस्य गतेरेवाऽसंभवः। अतः वाक्पपञ्चे छन्दरशास्त्रम् विशेषेण प्रामुख्यं भजति। तथा चोक्तं—'म्यरस्तजभनगैर्छान्तैरोभिर्दशिमरक्षरेः।

xvii

समस्तं वाब्ययं व्याप्तं त्रैलोक्यमिव विष्णुना ॥ 'मनुनाप्युक्तम् — 'यथोदितेन विधिना नित्यं छन्दस्कृतं पठेत् ' इति । छन्दांसि उक्ताद्यु-त्कृत्यन्तानि षड्विंशतिसंख्याकानि । तदुद्भवानि सर्वाणि वृत्तानि ॥ गुरुलघुक्कानोपायः—

३ वृत्तान्यक्षरमयानि । अक्षराणि गुरुल्ध्वात्मकानि । लघ्व-क्षरोचारणकालस्य 'मात्रा ' इति व्यपदेशः । गुर्वेक्षरम् द्विमात्रा-कालिकं । तल्लक्षणन्तु—संयुक्ताचं दीर्घ सानुस्वारं विसर्गसंयुक्तम् । विज्ञेयमक्षरं गुरु लघु पादान्तस्थं विकल्पेन ॥ इत्यार्थया विहितम्—

## 'स्यामं नः पालयेनमत्सखेव<sup>ः</sup>

इत्यत्र कमेणोदाहरणानि निर्दिष्टानि । एतछक्षणघटितगुरोर्भिन्नो छघुः । गुरुसंज्ञा ( ), छघुसंज्ञा ( ।), इति प्राचीनैरङ्गीकृतं । तथापि मुद्रणादिसो कर्यपर्याछोचनया, गुर्वक्षरसंज्ञा ( ) छव्वक्षरसंज्ञा ( ) इत्याधुनिकैरङ्गीकृतम् । एतदनुसारेणैव, अस्मिन् प्रन्थे गुरुछघुसंज्ञे विहिते । एते संज्ञे प्रस्तारोपयोगिन्यो सांकेतिकरेखाविशेषरूपे ॥

वृत्तं पुनर्द्विविधं — गणवृत्तं मात्रावृत्तं चेति । गुरुळघ्वात्मकञ्य-क्षरसमुदयो गणः । स च — म (---), य (०--), र (-०-) स (००-), त (--०), ज (०-०), भ (-००), न (०००), इति व्यक्षरमस्तारतत्वमयीदया अष्टघा समुत्यद्यते । (प्रस्तारतत्वं प्रथमे अनुबन्धे द्रष्टव्यं) । लगिकयामन्तरेणापि बालानां सुलभवोधाय अन्यथा निर्दिष्टस्ठोकोऽपि प्राह्यः ॥

> 'आदिमध्यावसानेषु यरता यान्ति छाघवम् । भजसा गौरवं यान्ति मनौ तु गुरुछाघवौ ॥ '

इति । मात्रावृत्तेषु मात्राचतुष्टयस्य गण इति नियमः । स च, (——) गुरुद्धयोपेतः, — ०० गुरुठघुळघुयुतः, ०० लघुउछुगुरु-युक्तः, ००० लघुगुरुठघुसहितः, ०००० लघुचतुष्टयभूतः, इति पञ्चधा भवति ॥

#### वृत्तसरूपम्-

४ वृत्तं पुनर्द्विविधं --- गणनिमित्तकं मात्रानिमित्तकंवेति । आद्यं त्रिविधं — समपादवृत्तं अर्धसमपादवृत्तं विषमपादवृत्तं चेति । द्वितीयं जातिरिति व्यवहृतं । तत्र मात्रासंख्यैव पादव्यवस्थापका । आर्यादयः प्रायः चतुष्पदीरूपाः । अन्यत्र द्विपदी, त्रिपदी, चतुष्पदी-पञ्चपदी, षट्पदीत्यादि बहुभेदघटिता वर्तन्ते । परन्तु सर्वेषु पादेषु सममात्रासंख्या अनैकान्तिका। यत्र पादव्यवस्था वा पादेषु मात्रा-व्यवस्था वा न भवति तत्र गाधिति व्यवहारः । तद्भिन्नानि दण्डका-दीनि । गणवृत्तेषु पुनः, यत्र चतुर्षु पादेषु एकरूपा गणसंख्या निर्दिष्टा, तत्र समवृत्तामिति व्यवहारः। अतः एतादृशवृत्तस्य एकपाद एव लक्ष्यतया निर्देष्ट्रमलं । अर्धसमपादवृत्तेषु, क च प्रथमतृतीयपादौ समौ, तद्भिन्नरुक्षणाविप द्वितीयचतुर्थपादौ च समौ । कचित्प्रथमद्वितीयपादौ समौ, तृतीयचतुर्थपादौ च अन्यथा समौ। कुत्रचित्रथमचतुर्थपादौ एकरुक्षणकी, द्वितीयतृतीयपादौ अन्यरुक्षणकी, इति महाकविप्रयोगै-र्वेदितव्यं । विषमपादवृत्ते तु चत्वारः पादाश्च भिन्नलक्षणकाः । यत्र पादद्वयमेकलक्षणकं, तस्माद्धित्री परस्परं च भिन्नी अन्यौ पादौ, तत्रापि विषमपादवृत्तव्यवहार एव । यत्र पुनः पादत्रयं वा पादद्वयं वा पादैकं वा एकलक्षणकं, इतरत् पादैकं वा पादद्वयं वा पादत्रयं वा मिन्नलक्षणकं तत्र उपजातिरिति, अन्योऽवान्तरमेदः ॥

## वृत्तसंख्यानिर्णयः—

५ समपादवृत्तसंख्यानिर्णयः प्रस्तारतत्वावधारणाधीनः। तद्धि-वरणं द्वितीयेऽनुबन्धे निर्दिष्टं। युक्त्या च वृत्तसंख्यानिर्देशस्स-मुपदिष्टः॥

यथा--- उक्तानामकछन्द्सः एकाक्षरपादवृत्तं जायते । तच गुरुलघुनिमित्तमधिकृत्य द्विधा भवति । अतः पादे पादे एक एव गुरुः, अथवा एक एव लघुारिति द्वे वृत्ते समुत्वचेते । गणिततन्त्रन्तु १×२=२ इति । अत्र पादात्मकोमकोमवाक्षरं, द्वाभ्यां, गुरुलघुभ्यां गुणितं चेत्फलं द्विसंख्याकं भवतीति तात्पर्यम् । तथा अत्युक्ताचछन्दसः २×२=४ वृत्तानि जायन्त इत्युक्ते, पूर्ववृत्तफलसंख्या द्वाभ्यां गुणितेति मन्त-व्यम् । तथैव मध्यमाच्छन्दसः ४×२=८ अष्टी वृत्तानि भवन्ति । एव-मेवाऽन्यत्रापि, तत्तच्छन्दोजातवृत्तसंख्या, तत्तत्पूर्वच्छन्दोजातवृत्तफल-संख्याया द्वाभ्यां गुणनेन निर्घार्यते। यथा-उत्कृत्यभिघानान्तिमच्छन्दो-जातवृत्तसंख्या, द्विगुणिततत्पूर्वच्छन्दोजातवृत्तसंख्येति बोद्धव्यम् । सा च ६,७१,०८,८६४ इति पस्तारिकयानिष्पन्नसंख्यैवेत्यवगन्तन्यम् । परन्तु तेषु त्रीण्येव वृत्तानि प्रयोगे दृश्यन्ते । संकलितानां सर्वेषां वृत्तानां संख्या १३,४२,१७,७२६, इति ॥ अन्योपि कमो यथा-—(२) $^{9}$ , (२) $^{8}$ ,  $(2)^{3}, \dots (2)^{3}$ , इति । एतद्विवरणमेवं $-(2)^{9}$ इत्यत्र गुरुलघुबोधकद्विसंख्या एकपर्यायेण २ ×१ इति गुण्यते। (२)<sup>२</sup> इत्यत्र २×२ इति द्विपयीयाभ्यां, (२)<sup>३</sup> इत्यत्र २×२×२ इति त्रिपर्यायैः, एवं क्रमेण  $(२)^{२६}$  इत्यत्र २ $\times$ imes२imes२imes२imes२imes२imes२imes२imes२imes२imes२imes२imes2ime imes im

#### वृत्तानां प्रयोगः-

तत्तच्छन्दोजातानां सर्वेषां वृत्तानां प्रयोगो यद्यपि न दृश्यते। तथापि वृत्तसंख्यापरिशोधनेन यानि यावन्ति वृत्तान्यात्मने रोचन्ते, तानि तावन्ति प्रयोक्तुं धीमतां शक्यमेव, न तु तत्राऽसंभवेलशोऽपि विद्यते । यथा-उक्तायां 'ग्श्रीः' इति रुक्षणोपेतं श्रीवृत्तं एकमेव कदारपण्डितादिभिरङ्गीकृतं । रुक्ष्यं च निर्दिष्टं । तस्मादेव छन्दसो जातस्य एकलब्बक्षरपादोपेतस्य अन्यवृत्तस्यापि नामलक्षणलक्ष्यान्यपि करूप-यितुं शक्यते । उदाहरणं — तद्भृतस्य नाम, 'सु ' (समीचीनं, शोभा-वहं, सुखकरं, वृत्तमिति यावत्)। लक्षणं 'ल्सु' (७) इत्युक्ते, ल्+सु इत्यत्र (ल्), एको लघुः, (सु) सुवृत्तस्य लक्षणमिति वेदितन्यं। लक्ष्यं-- 'क नु। स न॥' इति । ईटशलक्ष्येषु किमिप अर्थवैशद्यं वा, कापि काव्यसंपद्धा, कोऽपि चमत्कारो वा न भवति, किन्तु एतत् पद्यमीप वचनसरणिमेवानुकरोतीति मत्वा वृत्तग्रन्थकारैः तद्विचारः उपेक्षित इत्यनुमीयते । तावता का हानिः । वृत्तसंख्यानिर्णयावसरे तत्तद्वत्रययोगविचिकित्सायां, एतादृशपयोगस्य अवकाशोऽस्त्येव सुधियां। एवमेवात्यक्ताछन्दोजातवृत्तानि चत्वायीप 'गौ स्त्री' इति लक्षणोपेतं स्त्रीवृत्तमेकमेवोदाहृतं । अवशिष्टानां त्रयाणां वृत्तानामपि नामानि करुपयित्वा लक्ष्यलक्षणमनुसंघातुं शक्यते ॥

यथा---

१ इलावृत्तं—'ल्गिला'(० –) ल्+ग्+इला इति, पादे पादे एको लघुः एको गुरुश्च इलावृत्तस्य लक्षणं। 'हरिं भजे। हरं भजे॥' इत्युदाहरणम्।।

- २ वारिवृत्तं—'ग्ल्वारि' (—) ग् + ल् + वारि इति, एको गुरुः एको लघुश्च वारिवृत्तस्य लक्षणम् । 'सूतिकारि । कर्म किंनु ॥ ' इत्युदाहरणम् ॥
- ३ अनुवृत्तं ' छुनु ' (००) छ् + छ् + अनु इति द्वौ छघू अनुवृत्तस्य छक्षणम् । (एतच्छन्दसि प्रस्तारक्रमाछ्यानि त्रीण्यपि पूर्ववृत्तानि, अनुस्तं अनुगतं वा छघुद्रयात्मकं चतुर्थवृत्तमिति यावत् ।) ' इह सुत । मधु पिव ॥ ' इत्युदाहरणम् । मध्यमाच्छन्दोजातानां अष्टाना-मपि वृत्तानां प्रयोगः एतद्भन्थे कृत एव ॥

अतः परं, तत्तच्छन्दोजातानां सर्वेषां वृत्तानां एवं प्रयोगक-रूपना साध्याऽपि, न केवलं बुद्धिक्केशकरी, अपि तु न प्रयोजनावहेत्यु-पेक्ष्यते । परन्तु यस्य कस्य वा धीमतः केषां चिद्वृत्तानां करूपने कौतुकमस्ति चेत् स प्रयतेत, तत्प्रयतनं सिद्धत्येव ॥

#### छन्दरशास्त्रीयनूतनप्रन्थानामावश्यकता—

यथा शास्त्रान्तराणि प्रन्थबहुलानि, काले काले उपचितानि बहुभिराद्यानि न तथा छन्द्रशास्त्रम् । तत्र वृत्तरत्नाकरछन्दोमञ्जर्या-दयः कतिपय एव प्रन्थाः प्रचारे वर्तन्ते । छन्दोविचितिमुह्द्स्य, प्रन्थान् रचयितुमुद्युक्ताः कवयः पण्डिता वा विरलाः । छन्द्स्तत्व-रसास्वादिनश्च विरलतराः । अतोऽत्र किञ्चिद्वाग्देवतासेवा अवद्ययं कार्येत्यासीत्काचिच्चोदना ॥

एकाक्षरपादवृत्तादिसप्ताक्षरपादवृत्तपर्यन्तं, वृत्तानां प्रयोगः प्रायो न बहुरुः । तथा द्वाविंशाक्षरपादवृत्तादिषड्विंशाक्षरपादवृत्तपर्यन्तं वृत्तानि शास्त्रे निर्दिष्टान्यपि तेषां प्रयोगः प्रायशः काचित्कः । तत्त- त्रापि कश्चिद्यद्यमः कार्य इत्यपरोऽभिसन्धिः। एतद्गन्थरचनाव्याजेन बालानां नीतिधर्मबोधः, देवभक्तिः, आत्मतत्वज्ञानं, कर्तव्यकर्माभि-रुचिरित्यादि सुगुणाः यथामति वोधनीयाः इत्यन्या काचिदाशा। एत।दशसङ्करुपविशेषचेदिनया एतलूतनप्रन्थारम्भस्समाद्दतः॥

#### प्रकृतग्रन्थविचारः-

८ सर्वसमवृत्तविचार एवात्र विषयः। अत्र पिङ्गलनागपण्डिता-दिभिर्दिशितमार्गेण केदारपण्डितादिभिर्निर्दिष्टानि वृत्तानां लक्षणान्युररी-कृतानि। परन्तु लक्ष्योदाहरणविषये स्वप्नतिभानुगुणा अन्तःकरणप्रवृत्तिः निर्रगलमुदिता प्रस्ता प्रकाशिता वर्तते। वृत्तलक्षणनिर्देशावसरे, तत्तद्भृतस्य प्रस्तारयतिगणविवरणानि प्रदर्शितानि । वृत्तप्रस्तारसङ्ख्याद्यवबोघकाः केचिदनुबन्धा निबद्धाः। तत्तद्भृतपादाक्षरसङ्ख्यया लोके सुविदितानां त्रिम्ति-चतुर्वेद - पञ्चमहाभूत - षष्टृतु - सप्तवणीष्टवस्वकादशस्त्र-द्वादशादित्यादीनां स्वरूपादीनि यथाशास्त्रमुपवणितानि। एषेवास्य प्रन्थस्य मर्यादा।।

#### प्रथक्त्रीमसन्धः—

९ संस्कृतभाषायां, सर्वशास्त्रेषु सर्वतोमुखविषयानुहिश्य नव-नवा प्रन्थास्समुदिता दिने दिने सर्वत्र प्रसिद्धा भवेयुरिति प्रत्याशा मा-मनवरतमावृणोति । अतः—

'सांस्कृत्यां नवरीतिरञ्जितकृतिस्पर्घा कवीनञ्चतात् ।' इति कवेराशयं सम्यगाछोच्य संख्यावन्तः केचिदितोप्युत्तमतराञ्चतन-प्रन्थान् सञ्च्यापयेयुर्यदि, तदा मन्मानसोछासः परां काष्ठां भजत इति भृशं मे निश्चयः । अध्येतारो, बोद्धारो, विमर्शकाराश्च अस्मिन् प्रन्थे विद्यमानान् दोषानार्जवेन संस्कृत्य, गुणानौदार्येणामिनन्द्य, नैज- श्रद्धाप्रीत्याद्दतिमदं मत्प्रयतनं सफलीकुर्युरिति मुहुर्मुहुस्सादरमुदीक्षे । एवं प्राचीनाधुनिकपण्डितप्रमुखान् सगौरवमिभवन्द्य, विविधशक्ति-प्रभावमिहिमोपाच्तदेवताविशेषाचिविंशेषं संस्तुत्य, एताद्दशारम्भेणान्तः-करणशुद्धचापादनद्वारा तत्वशोधने, तत्वचिन्तने, तत्वबोधने च प्रज्ञां मे समुज्वलयतु भगवान्सर्वोत्मकः परमेश्वर इति श्रद्धामक्तिपुरस्सरं तमेवाऽन्यमनसा संप्रार्थये ॥

बहुधान्य।षाढासितदशमी, }
गुरुवासरः, (१९३८).

श्रीवेङ्कटरमणार्थः, श्रन्थकर्ताः

#### ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥

## सर्वसमवृत्रभाव:.

### ध्यात्वा छन्दोमयीं देवीं शब्दशक्तिस्वरूपिणीम् । समवृत्तप्रभावाख्यां रचयामि कृतिं शुभाम् ॥

संख्या छन्दः वृत्तम्, लक्षणम्, प्रस्तारः, विवरणम्. १ उक्तायाम्—१ श्रीवृत्तम्, ग्श्रीः, (–) एको गुरुः।

उदाहरणानि

१ श्रीर्माम् । अन्यात् ॥

२ गीर्माम् । पायात् ॥

३ धीर्मे । भायात् ॥

(परमात्मा एक एव)

४ एकः । देवः ॥

२ अत्युक्तायाम्—१ स्त्रीवृत्तम्, गौस्त्री, (--) द्वौ गुरू।

उदाहरणानि

(एकं तत्त्वं -यथा अद्वैते)

१ सत्यम् ज्ञानम् । ब्रह्माऽनन्तम् ॥

२ आत्मैकश्चित् । नित्यक्शुद्धः ॥ (द्वेतत्त्वे—यथासांख्ये) ३ आत्माऽव्यक्तम् । सांख्ये द्वे स्तः ॥

३ मध्यायाम्—१ नारीवृत्तम्, मो नारी, (---) मगणः।

उदाहरणे

१ मां पायाञ्चोकेशः । मक्तानां मक्तोऽहम् ॥ (त्रिमृतयः)

२ ब्रह्माद्यो विष्णुर्माम् । ईशोऽसौ संरक्षेत् ॥ २ मृगीवृत्तम्, रोमृगी, (-v-), रगणः।

उदाहरणम्

१ माधवोमाधवौ । गीर्धवक्श्रीप्रदाः ॥

अत्र विशेषाः — अष्टगणान्यतमकेवलगणवृत्तानि — यथा —

१ आदिलघुः —यगणः (५ – –)

उ.-- ग्रुरारिः पुरारिः । पुरारिर्भुरारिः ॥

२ मध्यलघुः— रगणः (- ∪ -)

उ.—स्वस्ति ते ब्रह्मणे । विष्णवे शंभवे ।।

३ अंत्यलघुः--तगणः (-- )

उ.—त्वामेव संस्तौमि । मां पाहि सर्वेश ॥

**४ सर्वलघुः - नगणः** (०००)

उ.—सदिदमिति हि। मनासे कलय।।

५ आदिगुरुः—भगणः (- 🗸 🗸 )

उ. - जन्मनि जन्मनि । ब्रह्म विभावय ॥

६ मध्यगुरुः—जगणः (० – ०)

उ. —जनार्तिहराय । भजाम सुजन्म ॥

७ अन्त्यगुरुः—सगणः (००−)

उ.—सुखदं हितदम् । भजतामयनम् ॥

८ सर्वगुरुः—मगणः (---)

उ.-श्रीकान्तं श्रीका¹न्तं । मन्दोऽहं वन्दे त्वाम् ॥

४ प्रतिष्ठायाम्-

१ कन्यावृत्तम्—म्गौ चेत्कन्या (---) मगणः गुरुश्च । उ.—१ मोक्षापेक्षा स्याचेद्धातः । संसारेऽस्मिन् सक्तो मा भूः ॥

चतुर्विध पुरुषार्थाः

२ धर्मश्रार्थः कामो मोक्षः । चत्वारस्ते सर्वै-र्लभ्याः ॥

५ सुप्रतिष्ठायाम्—

१ पङ्किवृत्तम्—भ्गौगिति पङ्किः (-००-- भगणः द्वौगुरू। उ.—१ आत्मसुदीपो राजति देहे। यावति काले तावति चेष्टा ॥

पञ्चमहाभूतानि

२ खानिलतेजोनीरधराख्यैः । प्राकृतभृतैः पश्चक-माहुः ॥

६ गायज्याम्—

१ तनुमध्या—त्यौ स्तस्तनुमध्या। (--००--) तगण-यगणौ।

उ.—स्वात्मानमजं त्वं मत्वाऽऽशु सुखी स्याः ।

नो चेदिह दुःखं बाधेत भृशं त्वाम् ॥
२ शशिवदना-शशिवदना न्यो।(००००-) नगणयगणौ।

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> श्रीकान्तम् = नीलकंठम्.

उ.-भव गुण¹धामा विनयसुधामा । श्रुतिसुमदामा स्मृतिहितदामा 2 ।। ३ वसुमती-त्सौ चेद्रसुमती। (---०००-) तगणसगणौ।

उ.--विद्या सखकरी बुद्धिर्धतिकरी। शक्तिर्जयकरी मक्तिः प्रियकरी ॥

४ विद्युहेखा-विद्युहेखा मोमः। (----) मगणमगणौ।

उ.-देवानां देवो यो भक्तचाऽहं तं सेवे। हार्दोऽयं दृष्टश्चेत्सर्वं मे सिद्धं स्यात् ॥

५ सोमराजी-- द्विया सोमराजी । (०--०-) यगणय-गणौ ।

उ.-१ स्तुवे सोमराजं श्रये श्रीविराजम् । दंध देवराजं ह्वये हद्विराजम् ॥

उ.—२ (षड्तवः) ॥ वसन्तो निदाघोऽथ वर्षाश्शरतस्यः। सहेमन्तकोऽन्यस्तथा शैशिरर्तः ॥

५ उण्णिहि-

१ मदलेखा- म्सौ गस्स्यान्मदलेखा। (--- ०० --) मग-णसगणौ गुरुश्च।

बाल्यकार्यम

उ.--१ बाल्ये त्वं तनुविद्यां पुष्य त्वं तव गात्रम्। व्यायामाद्भव हृष्टो भीशक्तिं कुरु शस्ताम् ॥

शकधनुषि सप्तवर्णाः

२ शुक्ले सप्त सुवर्णा रक्तोऽसावरुणोऽयम् । पीतोऽसौ हरितस्स्युनीलक्यामलपिंगाः ॥

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> गुण एव धाम यस्य सः। <sup>2</sup> स्मृत्युक्तानां हितानां दामा मालाभूतः। अथवा स्मृत्युक्तानि हितकराणि दामानि-दानानि (वराणि वा) यस्य सः।

सप्तर्षय:

## ३ स्तोष्ये कश्यपितश्वामित्रौ गौतममित्रम् । भारध्वाजवसिष्टौ सप्तर्षान् जमद्ग्निम् ॥

२ मधुमती - मधुमती ननगाः। (००००० -) नगणनगणौ गुरुश्च।

यौवनक र्यम्

## उ. —धनचयमधिकं नय तव सुखदम्। भव बहुसुयशा हितकुशलयुवा॥

३ कुमारलेलिता—कुमारलेलिता ज्स्गाः। (०-०००--) जगणसगणौ गुरुश्च।

कौंमारकार्यम् 1

## कुमारगतिकाले कुमारकुलयुक्तः । स्वधर्मानिरतस्त्वं सुकर्मफलभावस्याः ॥

४ हंसमाला—सरगा हंसमाला। (००--०-) सगणर-गणौ गुरुश्च।

वार्धिक्यकार्यम्

## उ.—समये जीर्णगात्रे सुसमो बन्धुवर्गे । सुरभूदेवसेवां कुरु तत्त्वार्थचिन्ताम् ॥

७ अनुष्ट्राभे-

१ चित्रपदा—भौगिति चित्रपदागः।(- ०० - ०० - -) भग-णभगणौ हो गुरू।

नवग्रहस्तोत्रम्

उ.—सूर्यः—

भास्कर भासय बुद्धिं लोकतमो हर सिद्धिम् । शाधि समाहितकार्ये त्वं ग्रहमण्डलुधर्यः ॥

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> ग्रैवनादनन्तरं वार्थिक ग्रत्पूर्वं यः कालः स कुमारगतिकालः, कुमारप्रा-प्रिकाल इत्यर्थः ।

उ.—चन्द्रः—

ऋक्षेत्र त्वं मित्रात्ताभा नष्टस्तापः कौम्रुद्या ते । आर्द्र कुर्यास्स्वान्तं नित्यं वंशं लोकं कारुण्यात्त्वम् ॥

३ माणवकम्—माणवकं भात्तलगाः (- ०० - - ०० -) भगण तगणौ लघुः गुरुश्च ।

उ.--मङ्गलः--

मङ्गलदो भूज सदा सूर्यसखस्सोमहितः। युद्धविदां सिद्धिकरक्शुद्धहृदां शं कुरु भो।।

४ हंसरतम् म्नौ गौ हंसरतमेतत् (---०००-) मगणनगणौ हौ गुरू।

उ.—बुधः—

सौम्यस्त्वं बुध महात्मा प्रज्ञां मे तनु विशालाम् । सौम्यं ते शुभफलत्वं साधृक्तं ग्रहसुयोगे ।।

५ समानिका— जौँ समानिका गलौ च। (-०-०-०) रगणजगणौ गुरुः लघुश्च।

उ.—गुरुः—

जीव देव विद्वदार्थ गीर्भुखादिजीवितेश । त्वं ममापि जीवहेतुरिष्टसिद्धिदो भवाऽऽश्च ॥

६ प्रमाणिका—प्रमाणिका जरौ लगौ । (०-०-०-०-जगणरगणौ लघुः गुरुश्च।

उ.─्शुक्रः─

कवे कवित्वशिक्षणं भवेत्प्रसादतोऽत्र ते । प्रणौमि भक्तिभावतो गुरुप्रभाववान्गुरो ॥ ७ वितानम् – वितानमेभ्यो यदन्यत्। जतौ वितानं गुरू-स्यात्। (v – v – – v – –) जगणतगणौ द्वौ गुरू।

उ.—शनिः—

शने शनैमें दयालो शमं प्रदेहि स्थिरं त्वम् । स्थिरां श्रियं त्वं प्रसादात्सदा तनोषि प्रियानाम् ॥

८ नाराचिका—नाराचिका तरौ लगौ। (--०-०) तगणरगणौ लघुः गुरुश्च।

उ.—राहुः—

राहो बलं प्रदेहि मे देहे मतौ त्वमत्र भो। द्वेषस्सभूतजार्कगो नात्मार्कतत्ववित्परः॥

९. कवरी—त्जौ ल्गौ यदि सा कवरी। (-- ००-००-)तगणजगणौ लघुः गुरुश्च।

उ.─केतुः─

केतो कुशलं स्वकुले जातो भवतो भजते। ज्ञानं तनु मे भजतो ध्यानं करवाणि मुदा ॥

१० स्रोकः—पंचमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः । षष्ठं गुरु विज्ञानीयादेतच्छोकस्य लक्षणम् । ( $^{\circ}$   $^{\circ}$   $^{\circ}$   $^{\circ}$   $^{\circ}$   $^{\circ}$   $^{\circ}$  ) = पूर्वार्थम् । एवं उत्तरार्थम् ॥

#### उ.-अष्टवसवः-

१ धृवोऽथ<sup>1</sup>वा धरो द्रोणो ह्यग्निर्वास्तुः प्रभाववान् । तथैव पंचमः प्रोक्तः प्रत्यूप<sup>2</sup>श्च विभावसुः ॥ २ दोप<sup>3</sup>स्सोम इति ख्यातः पष्टः प्राणोऽथ सप्तमः। आपो<sup>4</sup> वार्कोऽष्टमश्चेति वसवो ह्यष्ट ईरिताः ॥

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> प्रथमस्य वसोः—धृव इति धर इति वा संज्ञा. <sup>2</sup> पंचमस्य—प्रत्यूष इति विभावसुरिति वा संज्ञा. <sup>3</sup> षष्टस्य—दोष इति सोम इति वा संज्ञा. <sup>4</sup> अष्टमस्य— आप इति अर्क इति वा संज्ञा.

३.—गणेशः—

गणेशं नौमि भक्त्याहं भववन्धविम्रुक्तये । संपूजितस्सुराद्यैयस्वस्वकार्यार्थसिद्धये ॥

११ गजगतिः—नमलगा गजगतिः। (०००-०००-) नग-णभगणौ लघुः गुरुश्च ।

उ. - गजग्रुखे त्विय रितः प्रियकरा हितकरा । मतिकरा धृतिकरा भवतु सा भवज मे ।।

९. बृहत्याम् —

१ हलमुखी—रान्नसाविह हलमुखी। (-०-००००) रगणनगणसगणाः॥

> विष्नराजपदकमले संततं तव सुखनिधे। भृंगराजकालितद्शां मस्तकं मम वहतु भोः॥

२ भुजगशिशुस्ता—भुजगशिशुस्ता नौमः। (००००० – – ) नगणनगणमगणाः॥

जयित भवति देवं त्वां भजित जगित लोकोऽयम्। अखिलवयिस सम्मोदात्सकलमनिस भास्वन्तम्।।

३ भुजङ्गसङ्गता—सजरेर्भुजङ्गसङ्गता । (००-०-०-०) सगणजगणरगणाः॥

> निजवैभवात्त्विग्रहं जितदुः खसर्पभूषणम् । मतिमृषकाप्तवाहनं हितवारणास्यमाश्रये ॥

ध मणिमध्यम्--स्यान्मणिमध्यं चेद्भमसाः । (-००-- ००-) भगणमगणसगणाः ॥

शेकिविडंबं मा कुरु भोक्शोकदवाप्ति वारय भोः।
 ज्ञानविमूढं शिक्षय भो मानसमान्द्यं नाश्चय भोः।।

२. - नवरतानि -

वज्रमणिर्वेंड्यमिणिः पद्ममणिर्माणिक्यमाणिः । मारकतं गोमधिककं विद्यममुक्तानीलरुचः ॥

३.--नवग्रहाः--

स्र्यहिमांश् भृमिसुतस्सोमजजीवौ काव्यसुधीः। स्र्यजराह् केतुरिति स्याद्वहसंख्या सा नवका॥

१० पद्भाग्-

- १ सुमुखी—ससजास्सुमुखी मता गुरुः। (००-००-०-०-) सगणसगणजगणाः गुरुश्च ॥
  - १ सुवलस्सवलो विभो प्रभो वरदस्सुखदो यतस्सताम् । सफलं कुरु मो मयाऽऽद्दतं सकलं सुकृतं कृतं हितम् ॥ दशेन्द्रियाणि—
  - २ नयनं श्रवणं दृशि ध्वनौ
    रसना च नसा रुचौ मतौ।
    त्वगपि स्पृशतिक्रियाविधौ
    धिषणेन्द्रियपश्चकं विदुः ॥

विष्वक्सेनः-

विष्वक्सेनमुपास्महे सदा विष्वग्मीतिविदारकं मुदा। विष्विष्विध्निनिवारणं जनैर्विष्वकार्यमुखे त्वमर्च्यसे।। ३ पणवम्—स्नौ ज्गौ चेति पणवनामकम् । (---०००० -०-) मगणनगणजगणाः गुरुश्च ॥

> विष्वक्सेन भृशम्रुपास्यसे भक्तचाविष्टवरजनैस्सदा । सेनानीस्स गणपतिस्तथा कार्यार्थं त्वमाखिलसिद्धिदः॥

४ मयूरसारिणी—जौँ रगौ मयूरसारिणी स्यात् । (- · - · · · · · · · · ) रगणजगणरगणाः गुरुश्च ॥

पन्न महाभूतानि.

#### उ.--पृथ्वी--

भूरसानलानिलाभ्रयुक्ता मातृवत्समा समानरागात् । भृतजातपालनक्षमा त्वं भासि सस्यरत्नगर्भधाम्ना ॥

५ रुक्मवती-भ्मौ सगयुक्ता रुक्मवतीयम्-(-००--

#### उ.-आपः-

आदिमसृष्टा दृष्टिजलाढ्या पोषणमाता भृतहिता त्वम्<sup>1</sup>। सस्यजनानां पक्षिपश्चनां प्राणनकत्रीं लोकविधात्री।।

६ मत्ता-मत्ता श्रेया मभसगयुक्ता। (----००००--) मगणभगणसगणाः गुरुश्च ॥

उ.—तेजः—

स्र्यश्चन्द्रोऽग्निरिति च बुद्धं ज्योतीरूपं मतिगतिभासम् ।

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> जलामिमानदेवता.

## चेतक्कि बहुविधशक्ति ध्यायामि त्वां भृशमसुतत्त्वम् ॥

७ मनोरमा—नरजगैर्भवेन्मनोरमा। (०००-०-०-०) नगणरगणजगणाः गुरुश्च ॥

उ.--वायु:--

अनिलतत्त्वमाश्रये मुदा सकलभृतधारणक्षमम् । ध्वनिगतिक्रमाश्रयं सदा गतिरिति प्रपश्चकारणम् ॥

८ चम्पकमाला—चम्पकमाला चेद्भमसागः। (-००---००-- )भगणमगणसगणाः गुरुश्च॥

उ.—आकाशः—

चित्प्रथमाविभूतिवभूतिं सर्वगमाकाशाख्यसुतत्त्वम्। शब्दविभासे कारणमाद्यं मद्हृद्येशं त्वां परिसेवे ॥ ९ त्वरितगतिः—त्वरितगतिश्च नजनगैः। (००००-०००० -) नगणजगणनगणाः गुरुश्च॥

उ.-आत्मा-

जनयति यो गगनमरुद्दञ्जीतजलभूमुखमिखलम् । प्रकृतिवशान्मनसि कृतं सुखजलिं वृणु हृदि तम्।।

११ त्रिष्टुभि—

उ.—त्रयस्त्रिंशहेवतारहस्यम्-— चिद्रस्तु गुणाद्भवतिश्वराख्यो

मूर्तित्रयमित्यथ भूरि देवाः । त्रिंशत्सहितास्त्रय इत्यनन्ता-

स्तद्दैवतकं विदितं रहस्यम् ॥

२ इन्द्रवजा—स्यादिन्द्रवजा ततजास्ततो गौ। (-----००-०--) तगणतगणजगणाः गुरुद्धयं च ॥

उ.—अष्टवसवः, एकादशरुद्राः, द्वादशादित्याः, इन्द्रः, श्रजापतिः—

> तत्राष्ट देवा वसुरूपभाजो रुद्रास्तथैकादश देवरूपाः । तद्वादशादित्यवरेण्यरूपा इन्द्रः प्रजापत्यभिधानदेवः ॥

३ उपेन्द्रवज्ञा—उपेन्द्रवज्ञा जतजास्तता गौ। (०-०--००-०--) जगणतगणजगणाः गुरुद्वयं च॥

अष्टवसवः

वसुश्रिदाभासकृतादिशक्ति-र्वरा सुताऽभृदृषिकाश्यपस्य । सधर्मिणी सा वरधर्मपत्नी तयाऽभवन्द्रोणसुखाष्ट्रपुत्राः ॥

४ उपजातिः -- इन्द्रोपेन्द्रवजयोः संसृष्टभिन्नपादरूपा॥

उ.—१ द्रोणः--

द्रोणोऽघरो वा प्रथमो वसूनां मनोहरा वाऽभिमतिर्हि भार्या । तयोश्य सङ्गात्खलु जिज्ञरे ते हर्षो भयं शोकमुखाश्च भावाः ॥

उ.—२ प्राणः—

तथाऽनिलः प्राणवसुद्धितीय-स्सोर्जस्वतीऽवास्य शिवाऽस्ति भार्या ।

## पुरोजवोऽसौ सहसायुराभ्यां जातावविज्ञातगतिर्द्वितीयः ॥

५ सुमुखी नजजलगैर्गदिता सुमुखी । (००००-००-० ०-) नगणजगणजगणाः लघुर्गुरुश्च ॥

उ.—३ ध्रुवः—

ध्रुव इति नाम तृतीयवसु-भवति पतिस्स हि धारणया ॥ पुर इति काल इतीष्टसुतं सकलगतेः करणं भजते ॥

६ दोधकम्—दोधकतृत्तियदं भभभागौ । (-००-००-० ०--) भगणभगणभगणाः गुरुद्वयं च।

४ — अर्कः —

अर्कचतुर्थवसुद्यथवाऽप-स्तेन हि वासनया जनितास्ते । हर्षम्रखा गदिता जनिकार्याः कर्मश्रताश्रयभावविशेषाः ॥

७ शालिनी—शालिन्युक्ता स्तौ तगौ गोव्धिलेकैः। (----।----) मगणतगणतगणाःगुरुद्वयं च। चतुर्भिस्सप्त-भिर्यतिः।

५-अग्निः-

अग्निक्शुद्धः पंचमो वाऽनलोऽसौ धारा भार्या तस्य शाखो विशाखः। पुत्रा आसन् नैगमेयस्त्रयोऽथ ज्येष्टो भ्राता द्राविणो वा कुमारः॥ ८ वातोर्मी—वातोर्मीयं कथिता स्भौ तगौ गः। (---
००--०-) मगणभगणतगणाः गुरुद्वयं च।

६.--दाषः--

दोषण्यष्ठोऽस्ति वसुस्सोमनामा भार्यानाम्ना कथिता शर्वरी सा । तस्याः पुत्रो विदितस्सोऽपि वर्चा वर्चस्वी वाऽवरजाईश्रग्रमारः ॥

७.--वास्तुः--

वास्तुर्यस्सन्नमवसुरथवा

प्रा<sup>1</sup>दिर्भासोंऽगिरस उदरतः ।

<sup>2</sup>जाता मार्या तदुभयतनयो

वि<sup>3</sup>श्वंकर्माऽस्य स इति विदितः ।।

१० रथोद्धता—रान्नराविति रथोद्धता लगौ। (-०-०००-०-०-) रगणनगणरगणाः लघुः गुरुश्च।

८ विभावसुः—

अष्टमो वसुरसौ विभावसुः प्र<sup>1</sup>त्युषापतिरयं प्रभाववान् । व्युष्टरोचिषसुतौ तथा<sup>5</sup>ऽऽ तपो देवलो जयति सर्व भासकः ॥

११ स्वागतम्—स्वागतेति रनभागुरुयुग्मम् । (-०-०००-००--) रगणनगणभगणाः गुरुद्वयं च ।

 $<sup>^{1}</sup>$  प्रभासः.  $^{2}$  आंगोरसी.  $^{3}$  विश्वकर्मा,  $^{4}$  प्रत्यूषः.  $^{5}$  आतपनः.

१ चिन्मयाज्जगादिदं वसुरूपाच्छक्तितो विलसति प्रभयात्तम् ।
नौम्यहं प्रतिदिनं सवसन्तम्
चिन्मयं हृदिशयं पुरुषं त्वाम् ॥

२ भारते प्रकरणादियमुक्ता दानधर्मविषयादनुकृष्टा । आद्दता वसुकथा ननु देवी-तत्त्ववोधपरभागवतोक्ता ॥

३ उक्तमेव वरतैत्तिरशाखाऽ-रण्यभाग इदमद्भुततत्त्वम् । सूर्यरूपवसुदेवमहिस्रा कालदिक्परतया बहुधाऽलम् ॥

४ एकतोऽधिक कृता दशरुद्रा
एवमेव पुरतोऽभिहितास्युः।
भारतादिगतनामविशेषैबुद्धिगोचरसदर्थसुपात्तैः।।

१२ वृत्ता—ननसगगुरुरचिता वृत्ता। (०००००००---) नगणनगणसगणाः गुरुद्वयं च ॥

एकादशस्द्राः

१ अजः—

अज इति विदुरिह रुद्धं त्त्रां
न भजिस जिनिमिति यस्मान्त्वम् ।
प्रभविस जगदलमुत्स्रष्टुं
स्थितिपदगतिमदमाहर्तुम् ॥

**१३ पृथ्वी—ननभगगुरुगैरथपृथ्वी ।** (००००० --०० ---) नगणनगणभगणाः गुरुद्वयं च ॥

२ एकपात-

जगिददमिखिलं तव पादो विलसिस बहुधैकसुपात्त्वम् । सुखमयमथ तित्रपदं ते भवगतजनताशरणे ऽलम् ॥

१४ भद्रिका—ननरलगुरुभिश्च भद्रिका। (००००० – ० –

v –) नगणनगणरगणाः छघुः गुरुश्च ॥

<sup>1</sup> भव तवकरुणा ऽस्ति चेत्प्रभो धरति हि मृदुला<sup>ऽ</sup>त्र भद्रिका।

गुरुनयनपदं तृतीयकम् गुरुवलमिति चित्रवृत्तजम् ॥

१५ वित्रवृत्ता--ननतगगुरुभिश्च वित्रवृत्ता। (०००००---०--) नगणनगणतगणाः गुरुद्वयं च ॥

३ अहिर्बुध्नचः—

अवसि जगदहिर्जु भ्रेचदेवो दिविषदभिजुतस्त्वं हि लोके। स्थिरचरनिचयास्त्वत्प्रसादात् स्थितिगातिभरणे स्स्युस्सुशक्ताः॥

१६ इयेनिका—इयेनिका रजौ रलौ गुरुर्यदा (- v - v - v - v - v -) रगणजगणरगणाः लघुः गुरुश्च ॥

 $<sup>^1</sup>$  भांद्रकावृत्ते अहिर्बुध्न्यपदसमावेशस्थानु।पत्त्या तत्पदं तदनन्तरीयाचित्रवृत्ते-समावेशितं वर्तते इति तात्पर्यं, कविना सचमत्कारमुत्प्रेक्षितम् .  $^2$  अहिर्बिधः, अहिर्बुधः अहिर्बिध्न्यः अहिर्बुध्न्यः इति रूपं.

त्वं हि देव ईश्वरो पदद्वया-त्कालक्तंटधारणादहिस्स्मृतः। बृंहिसि स्वयं जगत्रयात्मना तेन बुध्नच इत्यपीह कथ्यसे।

१७ मौक्तिकमालां—मौक्तिकमाला यदि भतना गौ। (-०० --००००--) भगणतगणनगणाः गुरुद्धयं च ॥

४ विरूपाक्षः--

रुद्रगणेषु त्वमसि बलिष्ठो नौमि विरूपाक्ष तव पदाब्जे । बन्धविष्ठक्तौ दुरितविदाहे कारणमक्षित्रयमिति सेवे ।।

१८ श्रीवृत्तम्-पंचरसैश्श्रीभेतनगगैस्स्यात् (- ०० - - । ० ००० - -) भगणतगणनगणाः गुरुद्धयं च । पञ्चभिष्पइभियंतिः ॥

५ सुरेश्वरः-

पंचमरुद्रं मुनिगणसेन्यं स्वात्मिन देवं भजत सुरेशम् । रैवतसंज्ञं सुखमयरूपं कालविदृरं शुभमति शीलम् ॥

१९ उपस्थितम्—उपस्थितमिदं ज्सौ ताद्गकारौ । (०-०० ०---०-) जगणसगणतगणाः गुरुद्वंयं च ॥

६ जयन्तः--

जगत्रयमिदं धत्ते जयन्तः
पुरत्रयवधे देवाः कियन्तः।
दिनत्रयमग्रं ये ते भजन्ते
गुणत्रयकृतं शोकं कषन्ते॥

**२० सम्मता—नरयुगं भवेत्सम्मता लगौ।** (०००-०--०-०-) नगणरगणरगणाः लघुः गुरुश्च ॥

७ बहुरूपः-

स बहुरूपभाक् योऽस्ति सर्वग-स्सुलभमस्य तद्रूपधारणम् । अखिलशक्तितो विश्वरूपभाक् जयति भक्तितस्तं नमाम्यहम् ॥

२१ कुमारी—ययौ यो छगौ चेत्कुमारी मता । (०--०-

८ त्र्यंवकः— समे द्वे सुनेत्रे भजन्ति प्रिया-त्सुरास्ते न माहात्म्यमेतेषु किम् । रवीन्द् सुविज्ञानमक्षीणि ते जगद्धासयन्तीति जानन्ति ते ॥

१२ जगत्याम्-

१ चन्द्रवर्तमे—चन्द्रचर्तमे निगद्नि रनभसैः। (-०-००० -००००-) रगणनगणभगणसगणाः॥

९ अपराजितः--

सन्ततं त्वमपराजितपद्भाक्
त्वं न केन परिभूयस इति भोः।
पूज्यसे त्वममरैर्न परिभवस्त्वत्पदं हि भजताग्रुद्यति नः॥

२ वंशस्थम्—जतौ तु वंशस्थमुद्गिरितं जरौ। (०-०--००-०-) जगणतगणजगणरगणाः ॥ १० सावित्र्यः-

नमामि सावित्यमुदारतेजसं जगत्प्रस्तेस्सुनिदानमव्ययम् । विभासयत्येतदशेषलौकिकं स्वतेजसा योऽस्ति चितिस्वरूपवान् ॥

३ इन्द्रवंशा—स्यादिन्द्रवंशा ततजै रसंयुतैः।  $(-- \circ -- \circ \circ - \circ - \circ -)$  तगणतगणजगणरगणाः ॥

११ पिनाकी--

देवो हरो यो भवनाशको निजा-मध्यास्यमायां सृजिति त्रिविष्टपम् । प्रेम्णा पिनाकी सकलं विभर्त्यसौ भूयस्तथा संहरति स्वलीलया ।।

उदाहरणानि-

१ जटाघरोक्तचा हि समीरितक्रमा
रुद्रास्त एकादशसंख्यया युताः ।
विशेषनामानि भवन्ति भारते
मात्स्ये पिनाकी स च रैवतो हरः ॥
२ शिवो हरक्शंश्वपिनाकिनौ तथा
स्थाणुश्र भर्गो गिरिशस्सदाशिवः ।
कपालिनामेश्वरभैरवौ स्मृतास्तेऽन्यैरथैकादशरुद्रसंख्यया ॥

३ आरण्यके तैत्तिरसंज्ञके स्मृता मरुद्वरा रुद्रगणास्तु सौर्यकाः। विद्युत्प्रकाशादिकरा महोज्वला-स्सदान्तरिक्षे गतितो जगत्कृते ॥ ४ प्रभ्राजमाना व्यवदातसंज्ञका गणास्तथा वास्तुकवैद्यताश्च ते। वर्गश्रतुर्थी रजता हि पश्चमो गणस्तु नाम्ना परुषा इति स्मृतः ॥ ५ क्यामास्त षष्टः कपिलाऽतिलोहिता भवन्ति सप्ताष्टमवर्गभाजिनः। ऊर्ध्वाश्वरुद्रा नवमो गणो विदुः परस्तु वर्गोऽवपतन्तसंज्ञकाः ॥ ६ एकादशो वैद्युतनामशालिनां गणस्स्मृतस्तत्प्रथमप्रपाठके। तत्त्वानि तेषां विदितं भवेडूवं विवेकिनां भाष्यविदां महात्मनाम् ॥

४ तोटकम्—इह तोटकमंबुधिसैः काथितम्। (००-००-००-००-) सगणसगणसगणाः॥

द्वादशादित्याः

हरिवंशमुखादिपुराणकथा-वचनैर्भणितं श्रुतितस्वपरैः। इह सूर्यगणं स्वनस्य हितं विवृणोमि यथामति तस्वपरः॥ ५ हताविलंबितम् -- हतविलंबितमाह नभौ भरौ। (००० -०० - ०० - ० -) नगणभगणभगणरगणाः॥

१ विवस्वान्—

तव विवस्वत आत्मकमौष्ण्यकं विविधभूतगतं स्थितिहेतुकम् । यदि न तद्भवति क्षणमप्यहो तद्नु जीवति किं किमु वर्धते ॥

६ पुटः—मुनिशरविरातिनौँ म्यौ पुटोऽयम् । (००००००-।
--०-) नगणनगणमगणयगणाः । सप्तभिः पञ्चभिर्यतिः ॥

२ अर्यमा-

द्विद्शरिवगणे श्रेष्ठो ऽर्यमन् त्वं यदिह जनिमतामर्थं मिमीपे। तदुदयकरणे त्वं जागरूकः कलयसि सततं तद्वांछितं भोः॥

७ प्रमुदितवदना—प्रमुदितवदना भवेन्नौ ररौ । (००००० -०--०) नगणनगणरगणरगणाः॥

३ पूषा-

गगनबहुगतिस्त्वमेकर्षिकः
कृतजगदवनो ऽसि पूषाऽऽदरात्।
अनल इह समो नु किं ते त्विषा
कृषिशरणहितं स्तुमस्त्वां विभो।।

८ कुसुमविचित्रा—नयसहितौ न्यौ कुसुमविचित्रा।(०००० ——००००—) नगणयगणनगणयगणाः॥

४ त्वष्टा---

सु<sup>1</sup>रगृहकारी र<sup>2</sup>विकरहारी रवि<sup>3</sup>कृतसंज्ञस्त्रि<sup>4</sup>शिरस आत्मा। हरकृत<sup>5</sup>शूलो हरि<sup>6</sup>कृतचक्रो लससि खळु त्वं<sup>7</sup>कृतिसमनामा।।

९. जलोद्धतगितः—रसैर्जसजसौ जलोद्धतगितः। (०-०००
 -। ०-०००) जगणसगणजगणसगणाः। पद्भिष्पद्भिर्यतिः॥

५.-सविता--

जगत्त्रसविता त्वमप्प्रसविता
प्रचोदयसि नो धियोऽसि सविता ।
वरेण्यमिति ते शरण्यमिति ते
सुभर्ग इति तज्जपन्ति मनुजाः ।।

¹देवानां प्रासादादि निर्माता. ² सूर्यस्य किरणान् [तापं] हरतीति [ह्रस्वी-करोतीति]. ³रिवणा—सूर्येण, कृता—दत्ता, संज्ञा [सूर्यस्य पत्नी] येन सः. ¹त्रिशिरसः—तन्नामकस्य, आत्मा-पितृभूतः । त्वष्टुः आत्मैव यो पुत्ररूपेण जातः, स त्रिशिराः । 'आत्मा वै पुत्रनामासि ' इति श्रुतेः. ⁵ हराय कृतः—निर्मितः, ग्रूलः [तन्नामायुधिवशेषः] येन सः. ७ हरयेकृतं—निर्मितं, चक्रं [तन्नामायुधिवशेषः] येन सः. ७ हरयेकृतं—निर्मितं, चक्रं [तन्नामायुधिवशेषः] येन सः. कृत्या, समं नाम यस्य सः कृतिसमनामा । कृतिः—तक्षणकर्म, तद्वगुणं नाम—'त्वष्टा' इति । यतः—त्वस्य धातुः—तक्षणकर्मार्थकः, तस्य तृच् प्रत्ये विहिते, त्वष्टृ इति प्रातिपदिकं भवति । तस्य पुंसि प्रथमैकवचने रूपं त्वष्टा इति । अस्मिन् श्लोके त्रिषु पूर्वेषु पादेषु, अस्य आदित्यरूपान्यतमस्य, यानि कर्माणि निरूपितानि, तानि तक्षणकर्मसाध्यानीति कृत्वा, तत्कर्मानुगुणं नाम प्रकरणमनुम्रस्य 'त्वष्टा' इत्यनुमंतव्यं । अस्मिन् वृत्ते गुरुवर्णत्रयापादकस्य त्वष्टृपदस्य समावेशानुपपत्तिं पर्यालोच्य, उपरिनिर्दिष्टार्थः क्रिष्टकरपनोपि समाधानेनाङ्गीकार्यः ॥

१० भुजङ्गप्रयातम् — भुजङ्गप्रयातं भवेद्येश्चतुर्भिः । (० - - ७ - - ० - - ० - - ) यगणयगणयगणयगणाः ॥

६.--भगः--

मगो ऽसि प्रसिद्धो विवाहादिकार्यं सुसिद्धं करोषि प्रजानां प्रियं त्वम् । सनक्षत्रगत्या पडैश्वर्यशक्त्या त्वमादित्यतेजो विशेषात्सुरेशः ॥

११ स्निग्वणी । रैश्चनुर्भिर्युता स्निग्वणी सम्मता । (- - - - - - - - - ) रगणरगणरगणरगणाः ॥

७.—धाता—

धातृनामांकितो वायुसंधारणा-द्रिक्ससंदीपनात्कर्मसंस्थापनात् । ब्रह्मवत्स्यृष्टिकृत्प्राणिनामुद्भिदां स्थावराणामसि त्वं प्रभो तेजसा ॥

१२ प्रियंवदा—भुवि भवेन्नभजरैः प्रियंवदा । (०००-००० -०-०) नगणभगणजगणरगणाः ॥

८.-विधाता-

दिवि जलं भ्रुवि जलं विधातृतो हृदि बलं मतिबलं भवेत्सदा । अजगतिं हरिकृतिं हरिश्रयं सुविद्धन्वमुपकृद्विराजसे ॥

१३ मणिमाला—त्यौ त्यौ मणिमाला छिन्ना गुहवकैः। (—— vv——। —— vv——) तगणयगणतगणयगणाः । षड्भिष्षड्भिर्यतिः॥

९.--वरुणः---

सत्यानृतद्शी मर्त्यानवपश्यन् कालावरकस्त्वं राजाऽस्युदकानाम् । मित्रस्य सुयोगान्मैत्रावरुणोक्तचा वेदे वरुण त्वं देवादिरितीड्यः ॥

१४ लिलता—धीरैरभाणि लिलता तभौ जरौ । (--०-०० ०-०-०) तगणभगणजगणरगणाः ॥

१०.--मित्रः--

मित्रो हिताय जगतां त्वमेव भो-इशक्तो विशेषयजने प्रशस्यसे । चक्षुस्समस्तजगतोऽसि तस्थुप-स्तन्त्वां नमामि सततं सतां हितम् ॥

१५ प्रमिताक्षरा—प्रमिताक्षरा सजससैव्दिता। (००-०-०००-००-) सगणजगणसगणाः॥

११.--रविः--

त्वमशेषतो विदितवान्विभवैरमरेश्वरो घनपतिर्द्युतिमान् ।
प्रथमो हविश्वेगिति संकलितो
रिवरित्यतो निगदितो विबुधैः ॥

१६ ज्वाला — ननभमसहिताऽभिहिता ज्वाला । (००००० -००---) नगणनगणभगणमगणाः ॥

रविकरवालिता जलधावापो

मरुद् नुसरणाद्गगनं प्राप्ताः ।

घनगतिकलिताः कलिता वृष्ट्या

रविमरुद् नुगा भ्रवमायाताः ॥ १७ वैश्वदेवी—पञ्चाश्वैरिछन्ना वैश्वदेवी ममी यो। (------। -----) मगणनगणवगणवगणाः। पञ्चाभिस्ताभि-येतिः॥

१२.-- उरुक्रमः--

आदित्यो नित्यं विक्रमेत स्वयं द्यां त्रिः प्रातस्सायं मध्यमेऽह्नास्त्रपादैः । शब्दैस्त्वंविष्णूरुक्रमाद्येः प्रसिद्धो लोके सर्वे त्वां पूजयन्तेऽति नम्राः ॥

१८ जलधरमाला—अब्ध्यष्टाभिर्जलधरमाला म्भौ स्मौ। (---। ००००---) मगणभगणसगणसगणाः। चतुर्भि-रष्टाभिर्यतिः॥

द्वादशादित्यानां नामान्तराणि—
पूषा त्वष्टाऽर्यमसवितारौ शको
धाता विष्णुर्वरुणविवस्वान्मित्राः।
अंशस्द्वेयं खग इति चादित्याख्याः
लोकेष्वाद्वद्वेचिधकदशात्ता भेदाः॥

१९ अभिनवमालिका—अभिनवमालिका नजभयेस्स्यात् । (०००० - ० - ००० - - ) नगणजगणभगणयगणाः ॥

महेन्द्रः--

त्रिञ्चवनपालकोऽसि हि महेन्द्रो दितिसुतनाशकोऽमरवरेण्यः। सुकृतमनोरथान्सुकृतिनस्त्वं सुयजनशीलिनो नयसि नाकम्॥

२० प्रभा—स्वरशरविरितर्ननौ रौ प्रभा। (०००००-। ०--०-) नगणनगणरगणरगणाः। सप्तभिः पञ्चभिर्यतिः॥

प्रजापतिः—

प्रथमजननभाग्विभासिप्रजापतिरमलगुणो भ्रुवामीश्वरः ।
कलयसि मनसा त्रिलोकीं स्वयं
सुरद्नुजपिता गतिस्त्वं सताम् ॥

**२१ मानिनी--भवति नजाविह मानिनी जरौ।** (००००-००-०-०) नगणजगजनणरगणाः॥

त्रयस्त्रिंशदेवताः—

जगित हिताः कित देवतास्त्रयो दश दशतो दशसंयुता विदुः। श्रुतिविदिताः खल्ज तास्सहस्रधा मतिकुशलास्सुविभाव्य तन्वते।।

२२ अभिनवतामरसम् अभिनवतामरसं नजजा यः। (००० ०-००-००-) नगणजगणजगणयगणाः॥

भवति सदेकमिदं सुविचारे
त्रिविधमथो गुणतोऽजहरीशाः ।
तदनु तदात्मकृतं महिमाप्तं
वसुमरुदर्कगणं बहुधाऽऽहुः ॥

२३ गौरी—नयुगरयुगयुक्च गौरी मता। (०००००-० ---०-) नगणनगणरगणरगणाः॥

> अभिमतग्रुभलाभयोगाय वा भयकृदग्रुभयोगनाग्राय वा । विविधकृतिवचोभिरेतास्तुता-स्तदनुगतजनैहिं वागादयः ॥

२४ ललना--पञ्च सुनौ भ्तौ ससयुता ललना। (-००--। ०००-००-) भगणतगणसगणसगणाः। पञ्चभिस्सप्तभिर्यतिः॥

सन्ति हि देवा बहुविधा वरदास्तानिह वक्तुं कथमहं प्रयते।
नाम च रूपं गुणगणान्फलदान्
तत्कृतियत्नो भवति मे विफलः॥

२५ लिलतम् —लिलतमभिहितं नौ म्रो नामतः। (०००० ००----०-) नगणनगणमगणरगणाः॥

> प्रकटितमहिमा तेष्वेकैकको विलसति अवने देवस्येच्छया। तदणुरिप न मे बुद्धौ भासते किमुत जडिधया वक्तुं शक्यते॥

२६ मौक्तिकदाम—चतुर्जगणं यदि मौक्तिकदाम (v - v v - v v - v v - v) जगणजगणजगणजगणाः ॥

विभेमि नितान्तमशक्तिवशाद्धि सुखेन विचारयितुं निजवस्तु । तदीयमनुग्रहरूपफलं तु निदानमहं कलये विजयेऽत्र ॥

२७ कोकरता सयसैभेवेत्कोकरता ययुक्तैः (००-०--० ०--) सगणयगणसगणयगणाः ॥

कलये विभो त्वत्पद्पबसेवां
मनसा वचोभिमम कायकार्यैः ।
मुदितस्तया त्वं भव मे सहायस्सपदि प्रसक्ते गुरुशेषकार्ये ॥

१३ अतिजगत्याम्-

१ चञ्चरीकावली—यमौ रौ विख्यातौ चञ्चरी<mark>कावली गः।</mark>

एकादश गन्धर्वाः—

स गन्धर्वस्स्वानुर्भूरिशोभाननोसौ द्वितीयो आडास्ते आजतेऽयं प्रसिद्धचा ।

तथानाम्नांऽगारस्सोंहसां ब्रिट्पतिर्य-

स्स वंभारियों वंभ्रम्यमाणारिरास्ते ॥

२ क्षमा—तुरगरसयितनी ततौ गः क्षमा। (००००००। – ०--००) नगणनगणतगणतगणाः गुरुश्च सप्तभिष्षड्भिर्यतिः॥

हसनकृतिपरो हस्तसंज्ञो भवे-

च्छुभकररुचिभिर्यस्सुहस्तो विभ्रः।

कृशजनसुखदोयः कृशानुस्स्वयं

निखिलवसुधरो भाति विश्वावसुः॥

३ प्रहार्षणी—म्नेः ज्ञौ गस्तिद्शयतिः प्रहर्षिणीयं (--- ००० ० ०-०-०) मगणनगणजगणरगणाः गुरुश्च। त्रिभिर्दशिभ-र्यतिः॥

मूर्धन्वान्वहति यति श्वारः प्रधानं सूर्यस्येव रुचिधरस्स सूर्यवर्चाः । स्वं कृत्यं कुरुत इति श्रिया कृतिस्ते गन्धर्वाः प्रथितरुचो हि सूर्यरूपाः ॥

४ मत्तमयूरम् - वेदै रंध्रैम्तौँ यसगा मत्तमयूरम् । (----------) मगगतगणयगणसगणाः गुरुश्च । चतुर्भि-

र्नवभिर्यातः॥

त्रयोद्शविश्वेदेवाः —

विश्वेदेवास्संकथितास्ते दश पूज्याः देवानन्ये त्रीन्दशयुक्तान्परमाहुः। देवाः केचित्ते प्रियपौरूरवसंज्ञा-स्तेषामन्ये ह्यार्द्रवनाम्ना विदितास्यः ॥

५ रुचिरा —चतुर्वहैरिह रुचिरा जभस्जगाः। (०-०-। ० ०००-०-०) जगगमगणसगगजगगाः गुरुश्च। चतुर्भिर्नवभि-र्यतिः॥

> ऋतुर्वसुर्ध्वनिधृतिकालदक्षकाः परस्सकोऽपि च कुरुकामसत्यकाः। पुरूरवा दश च तथाईका धृरि-स्स रोचको तदनु विलोचनस्रयः॥

६ मंजुभाषिणी—सजसा जगाँ भवति अंजुभाषिणी। (००-०-०००-०-०) सगणजगणसगणजगणाः गुरुश्च ॥

धर्मविमर्शः —

नृवरोऽमरो भवितुमहीत स्वयं सुमना गुणैर्यदि भवेत्स्वधर्मजैः। स विपर्ययेन यदि जीवति स्थिरं दुमकीटपक्षिमृगजन्मवान्भवेत्।।

८ सरसा—सजसा स्सगौ च कथिता सरसैषा। (०००-०-

लभते स्वधर्मनिरतो बहु पुण्यं भजते हि तस्य सुफलं स जगत्याम्। विदितस्स्वधर्ममहिमा सुखदाता तमहं करोमि विश्वदं निजमत्या।।

७ सुमङ्गलिका—(कलहंसः) सजसास्सगौ यदि सुमंगिल-केयम्। (००-०-०००-००-) सगणजगणसगणसगणाः गुरुश्च॥

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> को वा भवेत्— (तस्य नाम न ज्ञायत इत्यर्थः).

अखिलानि यो धरित पाति स धर्मस्सुविधार्यते जगदनेन स धर्मः ।
अखिलं प्रतिष्ठत इदं खळु धर्मे
परमात्मनोऽस्ति न परस्स च धर्मः ॥

८ प्रभद्रकम्—भवति नजौ च सजगाः प्रभद्रकम् । (००० ०-०००-०-०) नगणजगणसगणजगणाः गुरुश्च ॥
स्विनजमहिम्नि यद्यं प्रतिष्ठितो
हृदि तदसौ सुविदितस्स्वधर्मवान् ।
स्वपदिवदत्र हि भवेत्स्वधर्मगो

१४ शक्वर्याम् —

९ असंबाधा—म्तौ न्सौ गावक्षश्रहविरतिरसंवाधा ॥ (-----। ०००००---) मगणतगणनगणसगणाः द्वौ गुरू॥ पञ्चभिनवभिर्यतिः॥

भज परमात्मनिजतत्त्वमात्मना ॥

कल्याणाऽऽधारान् यदि कलयसि तद्धर्मां-स्तानाचारे त्वं समनुसर मनक्क्युद्धचै। तन्मूला भक्तिभेवति खल्ज तया ज्ञानं ग्रुक्तिं सारूप्यादिमथ भजसि तेन त्वम्।।

२ अपराजिता—ननरसलघुगैस्स्वरैरपराजिता। (००००० ०-।०-००-०-) नगणनगणरगणसगणाः लघुः गुरुश्च। सप्त-भिस्सप्तमिर्यतिः॥

अनुकुरु परमात्मधर्मगुणान्सदा
यदि तव भवति स्वधर्मरतिः परा ।
ग्रुभगुणवद्यतो मनो विमलं भवेत्तदनु भवति ते परात्मनि मानसम् ॥

> उक्ता गुणा हि करुणाभयदानरक्षा-सत्यप्रसादसमतार्जवधीरभावाः । पारार्थ्यभूतहितचिन्तनभृत्यहिंसा देवस्य तान्समधिगच्छ यथोचितं त्वम् ॥

४ प्रहरणतिलका — जनभनलघुगाः प्रहरणतिलका । (००० ००० – ००००० – ) नगणनगणभगणनगणाः लघुः गुरुश्च ॥

#### करुणा-

विपदशितजने कुरु बहुकरुणां
प्रदिश सदयनं वितर बहुधनम् ।
तनु रुगपनयं वद हितवचनं
भर तदनुजनं नय तम्रदियनम् ॥

५ इन्दुवद्ना—इन्दुवद्नाभजसनेस्सगुरुयुग्मैः । (- ०००-०००-०००-) भगणजगणसगणनगणाः द्वौ गुरू ॥

अभयदानम् --

ईतिहतभूतिनहतान्सुपारेपातुं भूतहितभावभारेतो ऽपनयभातिम् । गेहधनसाह्यकरणाद्दिनिनाशात् साधु कुरु शोकहरणादभयदानम् ॥

६ अलेला—द्विसप्ताच्छिदलोला स्सौ स्मौ गौ चरणे चेत्। (---००--।---००--) सगणसगणसगणसगणाः द्वौ गुरू। सप्ताभिस्सप्तभिर्यतिः॥ रक्षा-

भूकंपादनलाद्वा व्यालश्वापदवाधात् शत्रोवीरिविधातादापनमोचनमारात् । कार्यं तक्षणकार्ये कृत्वा रक्षणमाद्यं भृतानामिह धैर्याद्रक्षासद्रुणभाक् स्याः ॥

७ कुमारी - नजमजगैर्गुरुश्च वसुषद् कुमारी (००००-०-०। ००-०-) नगणजगणभगणजगणाः द्वौ गुरू। अष्टभि-ष्यङ्भिर्यतिः॥

सत्यम्—

मनिस सुचिन्तनं नु सुधिया यथार्थं वचिस सुभाषणं नु सुहृदा यथार्थम् । कृतिषु सुकर्मकं नु करणेर्यथार्थं त्रिकरणसत्यमेव भजसे यथार्थम् ।।

८ मंजुभाषिणी—सजसा जगौ गिति च मंजुभाषिणी। (०० -०-०००-०-०) सगणजगणसगणजगणाः द्वौ गुरू॥

प्रसादः-

सफलं हितं भवति तत्प्रसाद्जातं

क्रियते प्रियं सुकृतशान्तमानसैर्यत् ।

तदलं सुमित्र भज भक्तिभावतस्तान्

सुजनान्परेशमिव सन्ततं प्रसन्नः ॥

९ सुकेसरम्—नरनरैर्लगौ च ललितं सुकेसरम् । (०००
०-०००-०-०) नगणरगणनगणरगणाः लघुः गुरुश्च ॥

समता —

द्विजनृपार्यश्रुद्रसकलान्त्यजेषु वा मृगगजाऽश्वगोश्वखगकीटकेषु वा

## सम्बद्यास्तदुःखसुखभूमिषु स्थिरो हृदि समाश्रय स्वसमतां सुकृती त्वम् ॥

१ आर्जवम्—

वक्रो हृदि भावा यदि न स्याच्छ्यते त्वां भूमार्जवभावक्शुचिभूमाविवरागः । मर्त्योऽखिलकार्येष्ट्रजुधर्माभिरतश्चे-त्तस्य प्रियवक्या जनताऽऽस्ते गुणरक्ता ॥

२ चतुर्दशमनवः—

स्वायम्भ्रवनामा प्रथमोऽसौ मनुष्कःस्त्वारोचिषनामौत्तमिकस्तापसनामा ।
तद्रैवतदेवो द्यपरश्राक्षुपदेवो
वैवस्वतनामा रविवंशादिमनुस्स्यात् ॥

३ सावणिरथायं परतष्पद्पद्वर्ती
दक्षो मनुरेषां प्रथमो ब्रह्मसुनामा ।
धर्मोमनुरुद्रौ हितरौच्यञ्चषडिन्द्रः
च्याता मनवो ये सचतुर्भिर्दशिमस्ते ॥

११ पथ्या—सजसा यलौ च सहगेन पथ्या मता। (००-० -०००-०-०-) सगणजगणसगणयगणाः लघुः गुरुश्च॥

धीरभावः-

धनबान्धवादिविलयेऽत्र चित्ते भवं व्यसनं निपात्य धृतधैर्यभावो यदा ।

## घनमार्गतोऽधिकृतकार्यभारस्तदा निजधीरभावगुणदीतिमांस्त्वं भवेः ॥

१२ प्रमदा—नजभजला गुरुश्च भवति प्रमदा । (०००० --) -००० -०० -) नगणजगणभगणजगणाः लघुः गुरुश्च ॥

पाराध्यम्-

तव जननं परार्थमिति भोः करुणारसपरिपूरणेन हृदयेन कृती ।
परहितमेव नित्यमनुगच्छिस चेच्वमथ परार्थतासुगुणमाद्रियसे ॥

१३ मध्यक्षामा—सध्यक्षामा युगद्शविरमा म्भौ न्यौ गौ। (----। ०००००----) मगणभगणनगणयगणाः द्वौ गुरू। चतुर्भिर्दशभिर्यतिः॥

#### भृतहितचिन्तनम्-

भ्तग्रामं कथमि सुखिनं कारुण्या-दुर्व्या कुर्यामिति मतिसुभगस्सर्वातमा । स्वार्थत्यागात्क्ररु हितमचलस्सर्वेषां भूतप्रीतिं भज भज सुगुणं धर्मात्मा ॥

१४ वासन्ती—मात्तो नो मो गौ यदिगदिता वासन्तीयम्। (----- गण्ण्ण्या हो गुरू॥

भूतिः--

ऐश्वर्य भूतिः परमहिता स्वातन्त्र्यात्मा व्याहारे भावे कृतिकरणे सौख्यावाप्तौ । आगारे देशे समराविधौ सैन्ये कोशे तक्तृत्यायुक्तो जयसि यथा लोकेशस्त्वम् ॥

१५ अतिशक्वर्याम्—

१ लीलाखेला—एकन्यूनौ विद्युन्मालापादौ चेल्लीलाखेला। (----) मगणमगणमगण मगणाः॥

अहिंसा-

केनाप्यन्ये नीता वाधा हिंसा प्रोक्ता लोकेऽस्मिन् नो चेकीता वाधा येनाऽहिंसावृत्तिस्साऽप्युक्ता। तद्धर्मस्थे हिंसावृत्तिनींदेत्यन्योऽन्याभावा-तद्धर्मात्मा शुद्धो योऽसौ बुद्धस्ताद्यभूयास्त्वम्॥

२ तूणकम्—तूणकं समानिकापदद्वयं विनाऽन्तिकम् । ( – v – v – v – v – v – ) रगणजगणरगणजगणरगणाः ॥

सांसारिकपरस्परधर्माः—

तत्स्वधर्मतत्त्वमुक्तमत्रसत्वरूपकं तद्गुणाश्च ते द्यनन्तधा स्थितास्तथापि ये । मुख्यतां भजन्ति तेऽपि द्शिता मितं गता नित्यकार्यमार्थधर्मतत्वमद्य कथ्यते ।।

३ शशिकला—द्विहतहयलघुरथगिति शशिकला। (०००० ००००००००) नगणनगणनगणनगणसगणाः॥

पितृधर्मः—

सद्शनवसनरुगपनयकरणं नयविनयमुखगुणभृद्धिकरणम् । श्रुतिततिकलितहितसुमतिकरणं स्वतनयविषयकपितृजनकरणम् ।।

४ स्नक् - स्नागिति भवति रसनवकयितिरियम्।(०००००। ०००००००) नगणनगणनगणनगणसगणाः। षड्भिर्नवभि-र्यतिः॥ पुत्रधर्मः—

स्विपत्विहितमतिहितकृतिकरणं सरुजि पितरि सुविधिरुगपहरणम् । विनयसद्यकृतपदपरिचरणं

पितृविषयकसुतजननिजकरणम् ॥

५ मणिगुणनिकरः — वसुहययतिरिह मणिगुणनिकरः । (०० ०००००। ००००० –) नगणनगणनगणनगणसगणाः । अष्टा-भिस्सनभिर्यतिः ॥

सतीधर्मः-

पतिपदरतियुतबहुपरिचरणं तदभिमतसरणिसग्जदनुसरणम् । प्रियकरसुमधुरसुखरसभरणं परिणयपतिकरगतिजनकरणम् ।।

६ मालिनी — ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः। (००० ००० — । — ० — – ० — ) नगणनगणमगणयगणयगणाः। अष्ट-भिस्सप्तमिर्यतिः॥

पतिधर्मः-

गुणगणसमवेतां मानिनीं स्वस्य भार्यां
गृहगतजनसेवाधमेसक्तां स्ववद्यां।
प्रणयवचनवित्तैः पालयेत्पूर्णभावैः
पतिजनकरणीयो धर्म एष प्रशस्तः॥
ग्रुक्कपक्षप्रतिपदादिपश्चदशाहानां श्रीतनामानि—
प्रतिपदि सितपक्षे नाम संज्ञानमाद्यं
सवितृहितकरे विज्ञानमिक द्वितीये।

नयति मुद्रमुमां प्रज्ञानमस्मिन्स्तृतीये गणपतिहितदे तञ्जानदाख्यं चतुर्थे ॥ गरुडमुद्दिभानत्पश्चमाहेऽथ षष्ठे गृहपरमहिते यत्तच सङ्कल्पमानम्। रविरथदिवसाहे कल्पमानं प्रपूर्व-ग्रुपपदसहितं दुर्गाष्टमे कल्पमानम् ॥ सनवमग्रुपक्लप्तं रामजन्मातिपूत सविजयदशमाहे क्लप्तमध्यं सुराणाम् । हरिहरहितभूते श्रेय एकादशाऽहे हरिभजनसुदीप्ते यो वशी द्वादशाहे ॥ त्रचिषककृतद्शाहे तच्छनेऽर्घ्यं यदायत् चतुरितदशके संभूतमानन्तकेऽहि । विधुकरपरिपूर्णे पूर्णिमाहे हि भूतं शरकलितदशाहेष्वेवमाहुस्समाख्याः॥ ७ चन्द्रलेखा—म्रौ म्यौ याढ्यौ भवेतां सप्ताष्ट्रभिश्चन्द्रलेखा। ---- मगणरगणमगणयगण-यगणाः। सप्तमिरष्टाभिर्यतिः॥

राजधर्मः—

राजाराष्ट्र समन्तात्स्निग्धान्तरङ्गः प्रजाना माहारार्थं यथावद्दृत्तिप्रवृत्तिव्यवस्थाम् । विद्याऽऽरोग्यार्थयोग्यां सन्मार्गरीतिं प्रकल्प्य प्रायो देशे विदेशे कीर्त्या स्वधर्माद्विराजेत् ॥

१६ अष्ट्याम्— १ वृषभगातीविलासितम्—भ्रौ त्रिनगास्स्वराः खमृषभगति- विलिसितम् (- ००-०-०। ०००००००-) भगणरगणनगण-नगणनगणाः गुरुश्च । सप्तभिनैविभियीतः ॥

प्रजाधर्मः---

राजनि तत्प्रजाश्च कृतसद्मलमनसो राज्यसुधारणाय बहुविधनयशरणाः । शत्रुविपच्छमार्थमतुलधनवितरणाः पान्ति हितं स्वधर्ममतिशयचतुरतया ।।

२ अभ्वगतिः पञ्चभकारकृताऽभ्वगतिर्यदिचान्तगुरुः (-०० -००-००-००-०) भगणभगणभगणभगणभगणाः गुरुश्च॥

गुरुधर्मः—

शिष्यजनादरतत्परिपालनशक्तगुरु-र्ज्ञानविबोधकशास्त्रविचारकभावगतिम् । सन्ततशिष्यमहोदयदायकमार्गतितं द्रागुपदिश्य ततो निजधमेमयं भजते ।।

३ पश्चचामरः — लघुर्गुहर्निरन्तरं यदा स पश्चचामरः (० – ० – ० – ० – ० – ० – ० जगणरगणजगणरगणजगणाः गुरुश्च ॥

शिष्यधर्मः--

निजं गुरुं सभक्तितस्स्वदैवतं विभावयन् तदार्यपादसेवया तदाज्ञया तदाश्रयात् ! तदात्त्रबोधबुद्धिमान्तदाशिषाप्रसिद्धिमान् स्वशिष्यधर्ममादरात्सुशिक्षितो हि सेवते॥

४ गुणभूषा — लघुयुग्माद्धिकाद्या मद्नार्ता गुणभूषा । अथवा प्रमाणिकागतप्रत्यक्षरद्विरुक्तया षोडशाक्षराात्मकपादो । पेता । अथवा द्विपञ्चाशत्तमिवतानविशेषवृत्तस्य पादौ यस्याः पादः सा। (चतुर्थाष्टमद्वादशषोडशाक्षरेषु यतियुक्ताऽपि गुणभूषा)

अथवा सभतैर्युग्यसगैर्युग्यतितुर्या गुणभूषा। (००--००-००--००--) सगणभगणतगणयगणसगणाः गुरुश्च। विवरणम्। अष्ट्याख्यछन्दोजातेषु पद्त्रिंशद्धिकपश्चरातोत्तरपश्चषष्टि
सहस्रसंख्याकवृत्तेषु, अष्टोत्तरशताधिकत्रयोदशसहस्रतमं
लघुद्धयगुरुद्धयक्रमेण षोडशाक्षरपादात्मकं वृत्तं गुणभूषाऽभि
धानेनात्र व्यवाहियते। (एतद्रन्थकत्रा रचिता 'स्तुतिकुसुमाअलिस्था गिरिजास्तुतिः' अस्मिन्नेववृत्ते निबद्धा भवति॥

गृहस्थसामान्यधर्मः-

गृहमेधी गृहिणीयुक्तिययुत्रैर्धनधान्यै विश्रतबन्धुः पुरुषार्थान्कुलधर्मान्हितकाले । परिपाल्य प्रणयेन स्थिरभक्तिं गुरुवर्गे सुचिरायुस्सुखभोगाननुभूयादिहयोग्यान् ॥

चन्द्रस्य षोडशकलाः—

२ अमृता मानदयाऽऽप्ता द्यथ पूषा सह तुष्या मुनिसंख्याः । सुखपुष्टिस्सह रत्या सह घृत्या मुनिसंख्याः । शिश्वानी चिन्द्रिकयाप्ता सह कान्त्या दशसंख्या-स्सह सा ज्योत्सिकया श्रीः किलता द्वादशसंख्याः॥ अथ सा प्रीतिकला चाङ्गदया सा सह पूर्णाऽ मृतयाऽऽप्ता सकलाष्याडशसंख्या हि कलास्ताः । सितपक्षे क्रमवृद्धा बहुळे हासमुपेता रविधास्नामुदयास्तैर्विधुभूमिश्रमणात्तैः ॥

षोडशमातृकाः—

४ वरगौरीमथ पद्मां सञ्चां तां भज मेघां
अथ सावित्यभिधानां विजयां तां च जयां ताम्।
कृतदेवाद्यपदाऽऽप्तामिह सेनां स्वधयाऽऽप्तां
सुयुगाहां द्विपदाद्यां श्रुणु ता मातर इत्थम्।।

4 अथ ता लोकपदाद्या विदिता मातर एवं
श्रुण ज्ञान्ति सह पुष्या सह श्रुत्या सह तुष्या ।
सकलाष्पोडशनाम्न्यः कुलदैवात्मकदेव्यो
बहुभाग्यं सुखमायुः कुशलं ते ददतेऽलम् ॥
५ वाणिनी—नजभजरैर्यदा भवति वाणिनी गयुक्तैः।(००००
-००००-००) नगणजगणभगणजगणरगणाः गुरुश्च॥
तक्त्विद्धमः—

भवति यदा मनस्सुकृतधर्मतो विशुद्धं तदनुगतायनेष्वधिगतोऽखिलार्थभारम् । स्वपरिहतोदयाय विनियुज्य तं स्वकामान् सुखमनुभूय भो निजसुखं भजाऽऽत्मवित्त्वम् ॥

१७ अत्यष्याम्—

१ शिखरिणी—रसैरुद्रैच्छिन्ना यमनसभलागिश्वाखरिणी। (०----। ००००--०००-) यगणमगणनगणसगणभ-गणाः लघुः गुरुश्च। षड्भिरेकादशभिर्यतिः॥

असंख्याकैर्यत्नैरिप पुरुषकारो हि विफलो न दैवं पर्याप्तं स्वयमित्वलकाम्यार्थविजये। स्वयत्नैर्धीरस्त्वं कुरु निजकृतिं भोः प्रतिदिनं स्वसिद्धेर्देवांस्त्वं तनु सुम्रुखिनस्स्वर्पितभरः॥

२ पृथ्वी—जसौ जसयलाग्वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः (० – ००० – ० – । ००० – ० – ० – ) जगणसगणजगणसगणयगणाः लघुःगुरुश्च । अष्टभिनेवभिर्यतिः ॥

> मनोरथपरायणो भज तवेष्टदेवं परं तदन्यमतिधारणं त्यज तदा धिया तत्परः । स एव सुशको भवेद्धटियतुं यथेष्टान् हितान् त्वमत्र परमात्मदृग्यदि तदा स सर्वेश्वरः ॥

३ वंशपत्रपतितम्—दिख्युनिवंशपत्रपतितं भरनभनलगैः। (-००-०-०००-। ००००००-) भगणरगणनगणभगणनग-णाः लघुः गुरुश्च। दशभिस्तप्तभिर्यतिः॥

लोकविश्वविभृतिवशतो भवति हि शतधा स्वीकृतरूपनामभिरतो भजनकरमुदे । माधवरामकृष्ण इति तं बहुविधवरदं शङ्करसांबरुद्र इति तं विदुरिह सुखदम् ॥

४ मन्दाक्रान्ता—मन्दाक्रान्ताजलियडगैम्भौ नतौ ते। गुरू-चेत्। (---। ००००-। -०--०-) मगणभगण नगणतगणतगणाः द्वौ गुरू। चतुर्भिष्यइभिस्सप्तभिर्यतिः॥

माधवः-

वन्दे देवं परमपुरुषं श्रीपितं माधवं त्वां
भक्तश्रेयोऽधिगमवरदं मोश्चदं श्रेष्ठरूपम् ।
कल्याणानां परमसुनिधिं पावकं पापराशेः
कारुण्याऽऽप्तं सुरनरहितं चिन्मयं स्वात्मभृतम् ॥

५ हरिवृत्तम् (हरिणी)—रसयुगहयैन्सौ म्रौ स्लौ गो यदा कथिता हरिः । (०००००। ———। ००००००) नगण सगणमगणरगणसगणाः लघुः गुरुश्च। षड्भिश्चतुर्भिस्सप्त-भिर्यतिः॥

राम:-

दशरथिहतं रामाकारं जगत्रयपालकं गुरुयजनपं सीताकान्तं वनाश्रयरक्षकं । कपिपतिसखं वन्दे भक्तचा विभीषणरक्षकं दशमुखहरं रामाहं त्वां धराऽमरपालकम् ॥ ६ नत्कुटकम् (नर्दटकम्)—हयदशिमनेजौ भजजला गिति नत्कुटकम् । (००००-०-।०००-००-००-) नगणजगण-भगणजगणजगणाः लघुः गुरुश्च । सप्तभिर्दशिभयंतिः ॥

कृष्ण:--

अरिजनभञ्जने कृतिधियं यदुवंशपतिं ग्रुनिजनरज्जने हितहृदं निजमक्तनिधिम् । कुरुकुलकर्षणे स्तुतज्ञयं विजयाद्यगतिं मम हृदि भावये सुरुनुतं विश्वकृष्णमहृम् ॥

अ कोकिलकम्—मुनिगुहकार्णवैः कृतयति वद कोकिलकम्।
 (००००-०-।०००-००।-००-) नगणजगणभगणजगण जगणाः लघुः गुरुश्च । सप्तभिष्षइभिश्चतुर्भिर्यतिः ॥

शङ्गरः--

मयहरशङ्करे स्थिरप्रियङ्करमुक्तिकरे शरणमहं भजेऽसुरनरामरशक्तिधरे । हितवरदानतो नरसुरासुरशक्तिकरे तव चरणाम्बुजे समवलंबनमारचये ।।

८ चित्रलेखा —ससजा भजगा गुद्दिक्स्वरैर्भवति चित्रलेखा। (००-००-०-। ०००-०-) सगणसगणजगणभगण-जगणाः द्वौ गुरू। दशभिस्सप्तभिर्यतिः॥

साम्बिशवः-

यदि साम्बिशवं भजाम्यहं सदुमया सहत्वां किम्रु देवगणैर्ममेतरैस्तव सदाश्रिता ये। भवपाशहरं भवं हरं सकलजीवपालं सुखशान्तिकरं प्रियात्मकं निखलभावबोधम्॥ सप्तद्शतत्वात्म कस्क्मशरीरम्.

१ सह घीन्द्रियपश्चकैः कृतं विषयगप्रतीतौ करणेन्द्रियपश्चकैस्समं कृतिपरायणैर्यत् । असुदानिलपंचकैर्युतं मितमनोयुतं त-न्निजसक्ष्मशरीरस्रुच्यते तद्नुगोऽयमात्मा ॥

१ घृत्याम्—

२ कैलासोऽमरसेवितस्तव मन्दिरं बहुसुन्दरं लोकाम्बा गिरिजा सती तव सुन्दरी हितशंकरी। हेरम्बो गणनायकस्तवपुत्रकस्सुरनायकः संसारः परमाङ्कतः कथमागतो वद देव ते ॥ अष्टादशपुराणानि—

३ ब्राह्मं भागवताप्रिके सुवराहकं वरवामनं मार्कण्डेयकनारदे वरालिङ्गकं परपासकम् । स्कान्दं ब्रह्मविवर्तकं परमात्स्यकं वरक्रमिकं ब्रह्माण्डं च भविष्यदित्यथ गारुडं शिववैष्णवे ॥ ३ निशा । (सुधा—नाराचम्) नगणयुगलरोब्धिरेषा यदा स्युर्निशा सा भवेत्। (००००००-०-०-०-०) नगणनगणरगणरगणरगणाः। दशिभरष्टभिर्यतिः॥

नगणनगणरगणरगणरगणरगणाः । दशिभरष्टिभियतिः ॥

भवति यदि भवे रुचिस्ते विलासात्सुखार्थं विभो

भव वद सुमते न युक्ता कुतो मानवानां तथा ।

प्रकृतिगुणवशाद्भवश्रेत्र शस्तस्सदा दुःखदो

गुणपरिहरणे विधिः को भवेत्त्वं मम ब्रूहि भोः ॥

४ करिणी—सनजा अपि नभसा शरयतिभियदि करिणी ।

(००-००।००-००।००-००।००-) सगणनगणजगणनगणभगणसगणाः । पञ्चभिः पञ्चभिः पञ्चभिक्तिभियतिः ॥

गिरिजा-

गिरिजे दिश घृणया मम भवसागरतरणं भवतोऽधिककरुणा यदि मयि तेऽनघहृद्ये । जलजन्तुभिरभितो भयकुशविह्नलतनये तरणि तव चरणं मम शरणं कुरु जननी ।।

५ कुसुमितलताबेल्लता स्याद्गृतत्वंश्वैः कुसुमितलता बेल्लता म्तौ नयौ यौ । (----। ०००० । -०--०) मगणतगणनगणयगणयगणयगणाः। पञ्चभिष्वइभिस्सप्तभिर्यतिः॥ कुमारः—

व्यर्था मे याच्या बत पितिर ते <sup>1</sup> मातिर त्विध्रभूतौ त्वत्साम्यं यस्मान्न मम गुणतो भूरिसामर्थ्यतो वा। तत्त्वामेवाहं शरणग्रुपगतस्तित्प्रयस्त्वं कुमारो नान्यो मत्कल्पस्सुगुणरहितो लाघवात्त्यक्तसङ्गः ॥ ६ हरनर्तकम्—नौं जयौ भरसहितौ करिबाणाक्षैईरनर्त-

६ हरनतकम् ना जया भरसाहता कारबाणाश्चहरनत-कम्। (-०-००००-।००--।००-०) रगणनगण-जगणयगणभगणरगणाः। अष्टभिः पञ्चभिः पञ्चभियंतिः॥

¹ त्वद्विभूतौ—त्वमेव विभूतिः (परमैश्वर्थ) यस्य सः तस्मिन् अथवा यस्या-स्या तस्यापः । दहं 'पितारे मातारे 'पदयोः प्रत्येकं विशेषणम्

कार्तिकेय सुरगणे वरसैन्यपः प्राथितो बली सप्तमातर इति ते प्रियनामतो दिश कोऽधिकः। तारकासुरहनने खल्ज दर्शितं सुजशौर्यकं कीदृशा वयमभयं त्विय याचितुं किस्र श्रुक्रमः।।

७ चित्रछेखा—मन्दाक्रान्तानछघुपरयुता कीर्तिता चित्रछेखा (----।००००००-।-०--०--)मगणभगणनगणयगण यगणयगणाः । चतुर्भिस्सप्तमिस्सप्तमिर्यतिः ॥

> त्वं चेत्पित्रोरयनमनुसृतो दीनकारुण्यशृन्यो गच्छेयं भोक्शरणमनुपदि प्रेमधामानमन्यम् । सन्त्येवाऽन्ये सरससुहृद्या रक्षणे मेऽत्र दक्षाः प्राप्तोऽहं त्वां तुल्यितुमनसा द्राक्परीक्षार्थमन्यैः ॥

८ नन्दंनम् —नजभजरैस्तुरेफसिहते दिश्वैहैयैर्नन्दनम् । (०० ००-०-००० -। ०-०--०) नगणजगणभगणजगणरगणः रगणाः । एकादशभिस्सप्तभिर्यतिः ॥

> प्राथितषडाननानि किम्रु ते पयस्सुपानाय वा चतसृषु दिक्षु संसृतिगतान्सुभर्तुकामाय वा । द्यधिकदशेक्षणानि प्रकृतेस्समीक्षितुं वा श्रियं च्यसनशतैईतानिह नरान्दयादशा रक्षितुम् ॥

९ शार्दृळळळितम्-मस्सोजस्सतसा दिनेशऋतुभिश्शार्दूळ-ळळितम्। (---००-०-००० । --०००) मगणसगण जगणसगणतगणसगणाः द्वादशभिष्यइभिर्यतिः॥

हेरम्बः-

हेरम्ब त्वमपीह मोदकपरो नालक्षयसि मां संरम्भादथवा तनोषि कुशलं भक्तस्य तव मे।

# आयातां वहुविन्नसन्तितमहं तीर्त्वाऽऽशु सुसुखी सेवे त्वामधिकप्रियात्प्रसुदितस्तेऽनुग्रहवशात् ॥

#### १९ अतिधृत्याम्—

१ मेघविष्कूर्जितम्—रसर्त्वश्वैरमौँ न्सौ ररगुरुयुता मघ-विष्कूर्जितं स्यात्। (०----।०००००-।-०--०) यगणमगणनगणसगणरगणरगणाः गुरुश्च। पड्भिष्पड्भिस्सप्त-भिर्यतिः॥

ह्षीकेशं ध्यायाम्यहमभयदं लोकरक्षासुदिक्षं हृषीकानां सम्यङ्नियमकरणे कारणं त्वामभेद्यम्। सदा देवैरीड्यं शुभकरमतिं सान्द्रकारुण्यसिंधुं विभो भक्तं ते मां विनयसहितं पाहि पद्माक्ष नित्यम्।।

मातस्ते तनयं तिरस्कृतसुखं मां पाहि पद्मालये
गोविन्देन न मे भवेत्सुफलिता या का चिदाशास्थिरा।
यत्तस्याश्रयिणो भवन्ति बहवो नाहं भवेयं प्रियो
मातुः प्रीतिरिह स्थिरेति मनुजैस्सामान्यतो गृह्यते।।

३ मणिदीप्तिः—मस्सौ तो जयगा मणिदीप्तिर्दिङ्निधिभिर्य-दिविच्छिन्ना। (---००-००-।-००-००-०) मग-णसगणसगणतगणजगणयगणाः गुरुश्च। दशभिनेवभिर्यतिः॥

लक्ष्मीस्त्वं धनदा सुमतीनां स्या विपुलं न धनेप्सा मे वाणि त्वं मतिदा सुकवीनां स्या विमलं न मतीच्छा मे । गौरि त्वं शुभदा सुकृतीनां स्या बहुलं न शुभाशा मे मातस्त्वं त्रिविधा त्रिगुणस्था तारय मां गुणशोकान्धः॥

४ वाणी-म्भौ स्नौ यस्सा गुरुसिहता निधिविरतिश्चेदिह-वाणी। (----००००-।००००--००-) मगणभगण-सगणनगणयगणसगणाः गुरुश्च। नवभिदेशभिर्यतिः॥

पुत्रो मारः पतिरहिशो जनि गृहं सागरमध्ये मत्तो वाहस्त्वमिप चला न मम गतिस्तेषु निराशा। किं तु प्राहुस्त्विय विमला निजकरुणा पालनदक्षा तामाश्रित्य प्रकृतिगतां समपनये तामसवृत्तिम्।।

६ सुमधुरा—म्रो भ्रो मे। नो गुरुश्चद्धयऋतुरसैरुक्ता सुमधुरा।
(---०-। ०००००-। --०००) मगणरगणभगणनगणमगणनगणाः गुरुश्च। सप्तभिष्णङ्भिष्णङ्भिष्पङ्भिर्यतिः॥

ब्रह्माणं त्वां भजेऽहं सकलजनताहृत्तापशशिनं ब्रह्माण्डान्तर्वसन्तं बहिरपि तथा सर्वान्तरगतम् । सृष्टिच्यापारकार्ये स्थिरकृतिधयं चित्राद्भुतकृतिं वेदानां बोधगम्यं स्तुतमतिबलं तेजोऽन्तरबलम् ॥

६ सुरसा—म्रौ भ्रौ यो नो गुरुश्चेत्स्वरमुनिकरणैराहसु-रसाम्।(-----।००००००-।-०००) मगणरगणः भगणनगणयगणनगणाः गुरुश्च। सप्तमिस्सप्तभिः पञ्चभिर्यतिः॥

लोकेश त्वां भजे त्वं मम सुखमभयं दातुमनसा
युक्तश्चेत्तन्मनो मे तव भजनपरं पादकलितं।
कुर्वेऽहं तेऽत्र मे भो समयमधुना लेख्यकलितं
मद्रस्ताङ्केन युक्तं त्वमिष क्रुरु तथा मानसलिषिम्॥
२० क्रत्याम—

१ वृत्तम्-त्रीरजौ गलौ भवेदिहेदशेन लक्षणन वृत्तनाम।

(-०-०-०-०-०-०-०-०-०) रगणजगणरगण-जगणरगणजगणाः गुरुः लघुश्च॥

वाणि मे नमोऽस्तु ते तवाशिषोऽत्र सन्तु मे सदाऽऽदरेण पालितोऽहमस्मि ते कृपाभरादतः त्रियो यतस्सुतोऽस्मि । पादपाणिकर्मणा प्रदक्षिणं तवार्चनं सुविग्रहस्य भक्तियुग्जनास्सुखं वितन्वतेऽबलस्त्वहं धिया करोमि ॥

२ सुवदना । श्रेया सप्ताश्वषड्भिर्मरभनययुता भ्छौगस्सु वदना । (----०-।०००००-।--०००) मगण-रगणभगणनगणयगणभगणाः छघुः गुरुश्च। सप्तभिस्सप्तभिष्य-ड्भिर्यतिः॥

विष्णोर्वाहो गरुत्मान् दृषभपतिरुमाकान्तस्य सविधे धातुर्हंसो मवान्या मृगपतिरधुना तान्यामि शरणम् । श्रान्तं मां ते नथेयुस्तदधिपतिपदं सौहार्दमनस-स्सान्निध्याप्ताः प्रभुभ्यो हितसमाधिगमे दक्षाः परिजनाः ॥

३ गीतिका। सजजा भरौ सलगा यदा कथिता तदा खलु गीतिका। (००-०-।००-०-००।-०-००-०-) सगण-जगणजगणभगणरगणसगणाः लघुः गुरुश्च। पञ्चाभिस्सप्तमिरष्ट-मिर्यतिः॥

हनुमात्रतो रघुनायके मम पालने खलु शक्तिमान् यदवारभवं रससागरं वहुरंहसा हि पुराऽतरत् । तदयं मुदा भवसागरं भुवि तारयेत्सुसुखेन मां सुपरीक्षिऽतो विहितोद्यमे स हि शक्नुयात्सदशोद्यमे ।।

२१ प्रकृत्याम्—

१ स्राधरा—म्रञ्जीर्यानां त्रयागां त्रिमुनियतियुता स्राधरा कीर्तितेयम्। (-----) मगणरगणभगणनगणयगणयगणयगणाः । सप्तभिस्सप्तभिस्स प्रभिर्यतिः॥

देवा यूयं समेताः पदगतमनुजं रिक्षतुं मां समर्थाः प्रत्येकं वो न शक्तियेदि भवति सदा स्वार्थिचिन्तापराणाम् । स्वार्थत्यागः परार्थं सम्राचितकरणे स्वार्थता तद्विचारे स्वात्मार्थस्स्याद्विचारः परपदभजनात्स्वात्मभावः परार्थः ॥

२ पञ्चकावळी—(सरसी-धृतश्रीः) नजभजजा जरै। नरपते कथिता भुवि पञ्चकावळी। (००००-०-।०००-००-।००-००-) नगणजगणभगणजगणजगणजगणजगणाः। सप्तिभि-स्सप्तिभिस्सप्तिभिर्यतिः॥

तव शपथं न किं स्मरित तं भगवन्यदनन्यभिक्तभाग्जनकुशलं वहाम्यहमिहेति निजं सकलिप्रयं प्रभो।
त्वदपरवस्तु किं वद यदस्ति यथाऽस्ति च तत्वमेव मे
तदनु विचारये श्रुतिकथां बहुधा प्रथितां प्रपिश्चताम्।।
२२ आकृत्याम्—

१ मद्गकम् (सुभद्गकम्)—स्त्रम्। भ्रौ त्रौ त्रौ त्गौ दिगा-दित्याः । भ्रौ नरता रनावथ गुरुर्दिगर्कविरमं सुभद्गकिमदम् । (-००-०-०००।०-०००-०-०००)भगणरगणनग-णरगणनगणरगणनगणाः गुरुश्च। दशभिद्वीदशभिर्यतिः॥

पालय मामगेन्द्रतनुजे सुरेन्द्रपद्दे नरेन्द्रवरदे

पाद्युगे ममास्त शरणं तवास्त करुणा मिय स्तुतगुणा।

भावय मामनन्यशरणं त्वद्न्यवरणं न मन्य इति हा

साधय मेऽभिलाषमपरं विलासविधुरं प्रकाशमधुरम्।।

२ हंस्री—मो मो तो नो नो नो सो गो वसुभुवनयतिरिति
भवति हंसी। (-------। ०००००००००००००

3.5

मगणमगणतगणनगणनगणसगणाः गुरुश्च । अष्टभिश्चतु-र्दशभिर्यतिः॥

लक्ष्मीदेवि त्वां वन्देऽहं सकलभ्रवनमनुजनिमतपादां
लक्ष्मीकान्तस्त्वद्वाग्वक्यो वद तमसकृदुपगतमव मां त्वम् ।
लक्ष्मीवासेनाऽलं तेन त्वमिय कनकमुखधनिमह दातुं
लक्ष्मीवन्तं कर्तुं दीनं प्रभविस क्रुरु मदवनिमिति याचे ॥

३ मत्तेभम्—तो भो यजौ सरनगाः पङ्किस्र्ययित मत्तेभ मत्र कथितम्। (--०-०००-०।-०००-००-०-०) तगणभगणयगणजगणसगणरगणनगणाः गुरुश्च। दशभिद्वीदश-भिर्यतिः॥

- १ प्रह्वादपालनरसिंहाय भक्तपरिपोषाय ते भगवते दैत्यान्विनाशियतुकामाय पापपारेहाराय तापशमिने । देवादिदेवसुरपूज्याय भूतभरणायाऽखिलाश्रयवते सर्वेश्वराय परिपूर्णाय देव वनमालिजमोऽस्तु शतशः ॥ तदेव समिभस्समभिरष्टभिर्यतिः ।
- २ रामं भजे मनिस रामं दधे शिरिस रामं धरामि हृदये। रामं स्तुवे वचिस रामं श्रये वयिस रामं करोमि सकलम्। रामं नमामि भ्रवि रामं तनोमि हृदभिरामं मुदाऽहमधुना रामं स्मरामि पररामं नयामि हितरामं शरीरगमिमम्।।

४ लक्ष्मीः नयसभयुक्ता ननसा गो दशरविकृतयति रिह लक्ष्मीः। (१००० – १००० – । १००००००० । नगण यगणसगणभगणनगणनगणसगणाः गुरुश्च । दशभिर्द्धांदशभि-यतिः॥

नरहरिसेवां कुरु नित्यं ग्रुमकरवरनविधभक्त्या हरिहररूपं भज सत्यं जनिहरपरतरसुखतत्त्वम् ।

1248

नरवर धीरं श्रुणु पथ्यं दरहरगरधरपदभक्त्या

सुरहरदेवं स्तुहि तेऽर्थ्यं घर गुरुरसभरपरमत्वम् ॥
२३ विकृत्याम्—

१ मत्ताक्रीडा । स्त्रम्—मौ हो नौ न्हो ग्वसुपश्चद्शतः ।
मत्ताक्रीडा मो म्तौ नौ नाविति लगिति च वसुशरदशयतिका ।
(-----। ००००। ०००००००० ) मगणमगणतगणनगणनगणनगणनगणाः लघुः गुरुश्च। अष्टभिः पश्चभिर्दशभिर्यतिः । अथवा । अष्टभिः पश्चदशभिर्यतिः ॥

१ वन्दे श्रीरामं श्रीरामं मम हृदयगतमभयहितविनयं

विश्वामित्रेड्यं सीताळां पितृवचनमनुविपिनकृतवसितम् ।
सुग्रीवाकांक्षादातारं दश्चवदनहरमिवततदवरजं
राज्ये जानक्या संयुक्तं धरणिजनहितकरणपरवश्चगम् ॥
२ रामे श्यामे सीतारामे त्वमिय रमय हृदयगगनपरमे
मायातीते कायापेते सुखय विषयलयसदसदुपरमे ।
संसारेऽस्मिन्कं सारस्स्यादिति हि सुमतिविदितपरमपदधी-

स्सत्यज्ञानानन्तानन्दे विहर सततिनहतकरणवितातिम् ॥

२ अदितनया—नजभजभा जभौ लघुगुरू बुधैस्तु गदितेय-मदितनया। (००००-०-०००-।०-०००-०-०००) नगणः जगणभगणजगणभगणजगणभगणाः लघुः गुरुश्च। एकादशभि द्वादशभिर्यतिः॥

भज भज देवकीवरसुतं विलासभिरतं सुभोगकितं तव हितकारणं सुरनुतं त्रिवर्गरहितं त्रिवर्गवरदम् । भवकृतदुःखगान्सुखियतुं य एव सुलभस्तमेव शरणं भज निजभिक्ततो वरगुणी हिताय मितमान्सुखाय गितमान्।। ३ अश्वलितम्—सूत्रम् । नजौ भजौ भलौ यद्वादित्याः । यदिह नजौ भजौ भजभलगास्तदश्वलितं हरार्कयतिमान्। (००००-०-०००-। ०-०००-०-०००-) नगणजगणभगण जगणभगणजगणभगणाः लघुः गुरुश्च ॥ एकाद्शाभद्वाद्शिः भिर्यतिः॥

स्वजननभूहिंता जगित का समा न हि तया समानहितया निजतनुजान्बलाद्रुतगतान्करोत्यीभम्रखान्करोङ्गतसुखान् । कद्शनतोऽपि सा प्रमुदिता दघाति मृतकं ददात्यमृतकं सुभजत पालिनीं स्वजननीं निजां सुकृतिनो निजांशकृतिनः॥

२४ संकृत्याम्

रिक्षतसीतं मज मज मनसा तारकपालकसुरनरनाथं कोसलनाथं दशरथतनुजं लक्ष्मणभूषितिनजपदलामम्। वायुजसेव्यं रिवसुतसुहृदं धर्मसुरक्षकभरतबलाख्यम् पालितधर्मं सुनिजनसुखदं धीरिवभीषणसुकृतशरण्यम्।।

२ अश्वलितम्—यदिह नजौ भसौ जसजसकास्तद्श्व-लितं स्वरेशरसाभित्।(००००-०-। ००००-०-००००-। ०-०००-) नगणजगणभगणसगणजगणसगणजगणसगणाः। सप्तभिरेकादशभिष्वइभिर्यतिः॥

यदुकुलपालके कुरुकुलदावपावकसखे त्रिलोकातिलके विनिहतकंसके सुविहतपाण्डनन्दनसुखे प्रभावशिशुके। अगणितदैत्यके विगणितलोकशोकगणके सुखप्रकृतिके ग्रुभगुणधारके त्रिगुणविधायकेऽतिभवुके मनो लगतु मे।। २५ अभिकृत्याम्-

साम्बिश्वं त्वं पूजय नित्यं भवहरभयहरसुखकरनिलयं सर्वगतं त्वं सर्वमयं तं स्थिरचरगतिकृतिरतिसृतिकरणम् । कारणमाद्यं कार्यवशाद्यं विदुरिह चतुरिधचतुरसमतनुं सच्चिद्नन्ताऽऽनन्दसुमृतिं भज सुखमनुभव निजहितमतुलम् ॥

२६ उत्कृत्याम—

१ भुजङ्गविजृंभितम्—स्त्रम्। मौ त्नौ नौ सौ ल्गौवसुरुद्रऋषयः । वस्वीशाश्वदछेदोपेतं ममतनयुगनरसलगैर्भुजङ्गविजृं
भितम्। (------। ०००००००००। ०-०००-) मगणमगणतगणनगणनगणनगणरगणसगणाः लघुः गुरुश्च।
अष्टभिरेकादशभिस्सप्तभिर्यतिः॥

देव्यां भक्तिस्सिद्धा चेन्मे करतलगतिमह भवुकं स्वजन्म-फलोदयं

भक्तिश्रद्धायुक्ता श्रीतिः कृतमतिमलतिविलयाद्भवेत्सुकृतो-दयात्।

त्रीतिस्ताद्दग्जायेतास्यां यदि शुचिमतिपरवशता ह्यनन्य-शरण्यता

लब्ध्वा तां त्वं तत्कारुण्यादतिश्चयशमयसुपदं मजार्य सुखास्पदम् ॥

२ अपवाहकः - सूत्रम् । स्नौ नौ नौ न्सौ गौ नवकर्तुरसे-न्द्रियाणि । मो नाष्यद्सगगिति यदि नवरसरसशरयतियुत- मपवाहाख्यम्।(---००००००।०००००।००००।००००।०० ---) मगणनगणनगणनगणनगणनगणसगणाः द्वौगुरू। नवभिष्यङ्भिष्यङ्भिः पश्चभिर्यतिः॥

वन्देहं सकलजनि जननमरणजलिधतरणसुधुरीणां त्वां सन्देहान्विविधजननिषयकमितसुदृढकिलतसुपदान्हन्याः। सन्दोहं विजितमनिस फलिततपीस विलसदमृतसुखधाराणाम् वन्दारौ मिय तव पदकमलमधुरमधुमधुलिहि कलयाम्ब त्वम्।।

३ शम्भुनटनम्—जसौ नभजसा नभलगा मनुदिवाकरय-तिर्यदि तु शम्भुनटनम्। (०-०००-०००-०००-।०००-०००-०००-) जगणसगणनगणभगणजगणसगणनगणभगणाः लघुः गुरुश्च। चतुर्दशभिद्यदिशभिर्यतिः॥

नमोस्त विश्वेन धृतिशरोध्वशिने लसदुमाकलितवर्ष्मविलेने सिवण्णविधिनन्दिमुनिनारदसुराऽऽहतसुवाद्यनुतगीतरुचिरे। अनेकविधनृत्तयुतताण्डवमहे गिरिजया सह सुलास्ययुतया विलोकपरनाटकगृहे त्वमनिशं प्रथमस्त्रणधरो विजयसे।।

> अज्ञानादत्र ये दोषा जाताः प्रमादतो भ्रमात्। विद्वांसस्तान् समीकुर्युरित्यहं प्रार्थये बुधान्॥

> > सामाप्तोऽयंग्रन्थः

ओं म्तत्सत्.

भाववत्सरमाघमाससितपञ्चमीमृगुवासरे (28-2-1935) कल्याणपुःगी (बेङ्गळूरुनगरे) चन्नरायपत्तनाभिजनेन श्रीवेङ्कटरमणार्येण वाग्देवी-सेवार्थ रचितोऽयं यन्थः सम्पूर्णस्समुह्नसति ॥

### प्रथमो ऽनुबन्धः

#### प्रस्तारक्रियानिष्पत्या वृत्तसंख्यानिर्णयः

संविधानक्रमः — यस्मिन् कस्मिन् छन्द्सि यावन्त्यक्षराणि भवेयुः, प्रथमित्यक्ष्रेण्यां तावतश्चतुष्कोणान् निर्माय, तेषु सर्वेषु गुरुचिह्नानि छेष्यानि । द्वितीयितर्यक्ष्रेण्यां तावत्स्वेव चतुष्कोणेषु मध्ये, पूर्वश्रेणीगतप्रथमगुरोरघस्स्थचतुष्कोणे छघु-चिह्नं न्यस्येत । तस्य वामपार्श्वगतचतुष्कोणेषु (छेषकस्य दक्षिणपार्श्वभूतेषु), तत्पूर्वश्रेणीस्थसर्वचतुष्कोणेणागतगुरुछघु-चिह्नानि यथावित्रवेश्यानि । तृतीयनिर्यक्ष्रेण्यामिष एवमेव। परन्तु, तत्र तद्दिश्वणपार्श्वगतचतुष्कोणेषु सर्वत्र गुरुचिह्नान्येव निवेशनीयानि । चतुर्थादितिर्यक्ष्रेणीगतचतुष्कोणेष्व पतत्कम्मेवानुस्त्य, यथोचितगुरुछघुचिह्नाने छेष्यानि । यस्यां तिर्यक्श्रेण्यां सर्वेषु चतुष्कोणेषु छघुचिह्नान्येव निक्षिप्तानि भवन्ति, तत्रैव प्रस्तारियामो भवति । ततः, तत्प्रस्तारश्रेणी संख्याः कियत्य इति गणियत्वा, तत्रोदितानां वृत्तानामिष तावत्यस्संख्याः इति निर्णेतव्यम् ॥

यथा-

#### २ उक्तायाम्—एकाक्षरः पादः.

१ गुरुः .... - १ श्रीवृत्तं-प्रसिद्धं २ लघुः ... v २ कल्पनीयम्

इति द्वेवृत्ते निष्पद्येते ॥

सूचना-अत्र ऊर्ध्वाकारायां आद्यन्तिमात्मिकश्रेण्यां स्थितयोः

चतक्कोणयोः एकैक्सरुल्यक्य रति विवेकः॥

### २ अत्युक्तायां द्यक्षरः पादः.

| १ गुरू    | •••• |   |   | १ | स्रीवृत्तं-प्रसिद्धं |
|-----------|------|---|---|---|----------------------|
| २ लघुगुरू | •••• | U |   |   | कल्पनीयम्            |
| ३ गुरुलघू | •••• |   | U | ३ |                      |
| ४ लघू     | **** | U | U | ક | •                    |

#### इति चत्वारि वृत्तानि निष्पद्यन्ते ॥

सूचना अत्र ऊर्ध्वाकारायां आद्यश्रेण्यां स्थितेषु चतुष्कोणेषु यावत्पूरं पूर्वप्रस्तारवत् एकैकगुरुलघुक्रमः । ऊर्ध्वाकारायां अन्तिम श्रेण्यां स्थितेषु चतुष्काणेषु द्विद्विग्रेरुलघु क्रम इति विवेकः ॥

### ३ मध्यमायाम् ज्यक्षरः पादः.

|         |      |   |    |   | 3.0                    |
|---------|------|---|----|---|------------------------|
| १ मगणः  |      |   |    |   | १ नारीवृत्तं-प्रसिद्धं |
| २ यगणः  | •••• | U | -  | _ | २ कल्पनीयम्            |
| ,३ रगणः | •••  |   | U  |   | ३ मृगीवृत्तं-प्रसिद्धं |
| ४ सगणः  |      | U | U. | = | ४ कल्पनीयम्            |
| ५ तगणः  |      |   |    | υ | 75                     |
| ६ जगणः  |      | U |    | U |                        |
| ७ भगणः  | •••• |   | U  | U | <b>9</b>               |
| ८ नगणः  |      | υ | U  | v | <b>4</b>               |
|         |      |   |    |   |                        |

#### इति अष्टौ वृत्तानि निष्पद्मन्ते॥

स्चना—अत्र ऊर्ध्वाकाराद्यद्वयश्रेणीगतचतुष्कोणेषु यावत्पूरं पूर्ववत् क्रमेण पक्षेकद्विद्विगुंचलघुक्रमः । ऊर्ध्वाकारन्तिमश्रेणीगत चतुष्कोणेषु चतुश्चतुर्गुचलघुक्रम इति विवेकः ॥

#### ४ प्रतिष्ठायां चतुरक्षरः पादः.

| १ मगणोगुरुश्च | _ |   |   |           | १कन्यावृत्तंप्रसिद्धं |
|---------------|---|---|---|-----------|-----------------------|
| २ यगणः        | U | _ |   |           | २ कल्पनीयम्           |
| ३ रगणः        |   | U |   |           | ₹ "                   |
| ४ सगणः        | U | U |   |           | 8 "                   |
| ५ तगणः        |   | _ | U |           |                       |
| ६ जगणः        | V |   | U |           | ξ "                   |
| ७ भगणः        |   | U | v | ******    | 9 ,,                  |
| ८ नगणः        | U | U | U | on plants | ۷.,                   |
| ९ मगणोलघुश्च  | _ | _ |   | U         | ۹ "                   |
| १० य ,,       | U |   |   | U         | १० "                  |
| <b>११ र</b> " |   | U |   | U         | ११ "                  |
| १२ स ,,       | U | U | _ | U         | १२ "                  |
| १३ त "        |   |   | U | U         | <b>१३</b> ,,          |
| १४ ज ,,       | U |   | υ | V         | <b>१</b> ४ "          |
| १५ भ "        |   | U | U | v         | <b>१५</b> ,,          |
| १६ न ,,       | v | v | v | v         | <b>१६</b> "           |

इति षोडशवृत्तानि निष्पद्यन्ते॥

स्चना—अत्र अध्वाकाराऽऽद्यत्रयश्रेणीगतचतुष्कोणेषु याव-त्पूरं पूर्ववत् क्रमेण, एकैकद्विद्धिश्चतुश्चतुर्गुरुलघुक्रमः। अध्वाकारा-न्तिमश्रेणीगतचतुष्कोणेषु अष्टाष्ट्रगुरुलघुक्रम इति विवेकः॥

### ४ सुप्रातिष्ठायां—पश्चाक्षरः पादः.

| Ą  | मगणे | गुरू   | च      | page of the second | _ |   |   | e agrica melanno e il c | १   | कल्पनीयम्    |
|----|------|--------|--------|--------------------|---|---|---|-------------------------|-----|--------------|
| ર  | य    | 23     |        | υ                  |   |   |   |                         | ર   |              |
| ą  | र    | "      |        |                    | U |   | _ | _                       | 32  | <b>&gt;9</b> |
| ક  | स    | 11     | ••••   | U                  | U |   |   |                         | ઝ   |              |
| (4 | त    | **     |        |                    |   | U |   |                         | CQ. | 99           |
| દ્ | ज    | 1)     |        | U                  |   | U |   |                         | ફ   | 295          |
| હ  | भ    | 5)     | ••••   |                    | υ | U |   |                         | O   | पङ्किः       |
| 4  | न    | 77     |        | U                  | U | U |   |                         | 6   | कल्पनीयम्    |
| ९  | मगणं | लिघु   | गुरू च | _                  |   |   | U |                         | ९   | ,,           |
| १० | य    | 23     | ••••   | U                  |   |   | U |                         | १०  | <b>35</b>    |
| ११ | ₹    | ,,     | ****   | _                  | U |   | U |                         | ११  | 93           |
| १२ | स    | 27     |        | U                  | U |   | U |                         | १२  |              |
| १३ | त    | "      | ••••   |                    |   | U | υ | _                       | १३  | 29           |
| १४ | ज    | 21     | ••••   | υ                  |   | U | υ | _                       | १४  | <b>99</b>    |
| १५ | भ    | ,,,    | ••••   |                    | U | U | υ |                         | १५  | "            |
| १६ | न    | ,,     | •••    | U                  | υ | U | U |                         | १६  |              |
| १७ | मगणं | ोगुरुः | छघू च  |                    | _ | _ | _ | U                       | १७  |              |
| १८ | य    | ,,     |        | v                  | _ |   | _ | U                       | १८  |              |

| १९   | रग   | णोगुर       | लघू च |    | U        |          | -  | v | १९ | कल्पनीयम्                             |
|------|------|-------------|-------|----|----------|----------|----|---|----|---------------------------------------|
| २०   | स    | 5,          | ••••  | U  | U        |          |    | U | २० | ,,                                    |
| २१   | त    | "           |       | _  |          | υ        |    | υ | २१ |                                       |
| २२   | ज    | ,,          | ••••  | U  |          | υ        |    | υ | રર |                                       |
| २३   | भ    | 29          | ••••  |    | υ        | υ        | _  | U | २३ | <b>73</b>                             |
| રક   | न    | 52          | ••••  | υ  | U        | U        | _  | U | રક | 1                                     |
| २५   | मगणे | ोालघू       | च     | _  | _        |          | U  | υ | २५ |                                       |
| २६   | य    | "           | ••••  | υ  |          |          | U  | υ | २६ |                                       |
| २७   | ₹    | "           |       | _  | υ        | _        | υ  | V | २७ |                                       |
| २८   | स    | >5          | •••   | U. | υ        |          | U  | U | ર૮ | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · |
| २९   | त    | <b>,</b> ,, |       | _  | <u>-</u> | <b>U</b> | IJ | U | २९ | <b>**</b>                             |
| · ३० | ज    | ,,          | ••••  | υ  | <u> </u> | υ        | U  | υ | ३० | "                                     |
| ३१   | भ    | "           | •••   | -  | U        | U        | υ  | U | ३१ | <b>13</b>                             |
| ३२   | न    | 25          | ••••  | U  | U        | υ        | U  | υ | ३२ |                                       |
|      |      |             |       |    |          |          |    |   |    |                                       |

इति द्वात्रिंशद्भृत्तानि निष्पद्यन्ते ॥ सूचना—अत्र ऊर्ध्वाकाराऽऽद्यचतुष्टयश्रेणीगतचतुष्कोणेषु यावत्पूरं पूर्ववत्क्रमेण, पकैकाद्विधिश्चतुश्चतुरष्टाष्ट्रगुरुलघुक्रमः । ऊर्ध्वाकारान्ति मश्रेणीगतचतुष्कोणेषु, षोड्राषोडरागुरुलघुक्रमइति विवेकः॥

### गायत्र्यां षडक्षरः पादः

|            | -                                       |             | and the second second second   | -          | and the state of t |          |      |
|------------|---|-------------|--|------------|--|----------|------|
| १ मगणमगणौ  |   |             |  |            | and the second   |          | १    |
| २य ,,      | υ                                       |             |  |            | 600.00   | advertis | २क   |
| ३ र ,,     |   | υ           | UNION STATE OF THE PARTY OF THE |            |  |          | 37   |
| ४ स ,,     | U                                       | υ           |  |            |  |          | ક    |
| ५ त ,,     |   |             | U  |            |  |          | બ    |
| ६ ज ,,     | υ                                       | Saudinana . | υ  |            | , and the second   |          | હ્   |
| ७ भ ,,     |   | U           | U  | ) polyador |  |          | 0    |
| ८न "       | U                                       | U           | U  |            |  |          | ۷    |
| ९ मगणयगणौ  |   |             |  | U          |  |          | 0    |
| १० य ,,    | U                                       |             |  | U          |  |          | १०   |
| ११ र "     |   | U           |  | U          | _  |          | ११ व |
| १२ स ,,    | U                                       | U           | _  | υ          |  |          | १२   |
| १३ त "     | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, |             | υ  | v          | _  |          | १३ त |
| १४ ज ,,    | U                                       |             | U  | υ          |  |          | १४ क |
| १५ भ "     |   | U           | U  | v          |  |          | १५   |
| १६ न ,,    | v                                       | υ           | U  | U          |  | _        | १६ इ |
| १७ मगणरगणौ | _                                       |             | <u>.</u>   |            | U  | _        | १७ क |
| १८ य "     | v                                       | -           |  | -          | υ.   |          | १८   |
|            |   |             |  |            |  |          |      |

विद्युहेखा कल्पनीयम् " ,, " ,, " " सोमराजी **हल्पनीयम्** " तनुमध्या **ह**ल्पनीयम् राशिवद्ना तल्पनीय**म्** 

|            |   |   |   |   |   | 22.0 |              |
|------------|---|---|---|---|---|------|--------------|
| १९ रगणरगणौ |   | U | _ |   | U | _    | १९ कल्पनीयम् |
| २० स ,,    | U | υ | - | - | υ |      | ૨૦ "         |
| २१ त "     |   |   | υ | _ | v | _    | २१ "         |
| २२ ज ,,    | υ |   | U |   | U |      | २२ "         |
| २३ भ ,,    |   | υ | υ | _ | υ |      | २३ "         |
| २४ न ,,    | U | U | U |   | U |      | રક ,,        |
| २५ मगणसगणौ |   |   |   | U | U |      | રષ ,,        |
| २६ य "     | U |   |   | U | U |      | २६ "         |
| २७ र ,,    |   | U | _ | U | U |      | રહ "         |
| २८ स "     | U | U |   | U | v |      | સ્ટ "        |
| २९ त ,,    |   |   | U | U | U | _    | २९ वसुमती    |
| ३० ज "     | U |   | U | U | U |      | ३० कल्पनीयम् |
| ३१ भ ,,    |   | U | υ | υ | U | _    | <b>3</b> 8   |
| ३२ न "     | v | U | υ | U | U |      | <b>ર</b> ર " |

### गायत्र्यां षडक्षरः पादः

| and the second of the second o |            |                     |   |          |   |     | •             |
|--|------------|---------------------|---|----------|---|-----|---------------|
| ३३ मगणतगणौ   | 1          |                     | _ | _        |   | · U | ३३ कल्पनीयम्  |
| ३४ य "   | U          |                     | _ |          | _ | v   | રૂઝ ,,        |
| ३५ र "   | Table 1988 | υ                   |   | ,,,,,,,, |   | υ   | ₹¢ ,,         |
| ३६ स "   | v          | υ                   |   |          |   | U   | ₹ <b>६</b> ,, |
| ३७ त ,,  | contra     | Bragger and Bragger | U |          |   | U   | ३७ ,,         |
| ३८ ज "   | U          |                     | U |          |   | U   | રૂટ ,,        |
| ३९ भ ,,  |            | U                   | U |          |   | υ   | ३९ "          |
| ४० न ,,  | U          | U                   | U |          |   | U   | 80 "          |
| ४१ मगणजगणौ   |            |                     |   | U        |   | U   | કર <u>"</u>   |
| <b>४२ य</b> ,,   | U          |                     |   | U        |   | U   | કર "          |
| <b>४३ र</b> "  |            | U                   |   | υ        |   | υ   | <b>૪</b> રૂ " |
| ४४ स "   | V          | U                   | _ | υ        |   | υ   | 88 "          |
| ४५ त ,,  |            |                     | U | U        |   | υ   | <b>૪</b> ૬ ,, |
| ४६ ज ,,  | U          | _                   | U | U        |   | υ   | <b>ક</b> દ "  |
| ४७ म ,,  | _          | U                   | U | U        | _ | U   | ૪ <b>૭</b> "  |
| ੪८ न "   | U          | U                   | U | U        |   | U   | કદ "          |
| ४९ मगणभगणौ   | _          |                     |   | _        | U | v   | ક <b>ર</b> "  |
| ५० य "   | U          | -                   |   |          | U | v   | 40            |
|  |            |                     |   |          |   |     |               |

| ५१ रगणभग | णौ   |   | U | - | _   | U | v | ५१ कल्पनीयम्   |
|----------|------|---|---|---|-----|---|---|--|
| ५२ स "   |      | U | υ | _ |     | υ | v | .53  |
| ५३ त "   | •••• |   |   | U |     | υ | υ | ५३ "   |
| ५४ ज "   | •••• | υ | _ | υ |     | U | U | 48 .,  |
| ५५ स ,,  |      |   | U | υ | _   | v | U | <b>44</b> ,,   |
| ५६ न "   |      | U | U | U |     | υ | υ | ५६ "   |
| ५७ मगणनग | णौ   |   |   |   | υ   | U | υ | ५७ ,,  |
| ५८ य ,,  |      | U |   |   | U   | υ | U | ५८ "   |
| ५९ र "   |      |   | v | _ | υ   | U | v | <b>५</b> ९ ,,  |
| ६० स "   |      | v | U |   | v   | U | υ | <b>દ</b> ૦ .,  |
| ६१ त "   | •••• | _ |   | υ | U   | υ | υ | ६१ ,,  |
| ६२ ज "   |      | U | _ | U | U   | U | U | <b>દર</b> "  |
| ६३ भ "   |      |   | U | U | , v | U | υ | <b>6</b> 3 ,   |
| ६४ न "   | ···· | v | U | U | υ   | υ | U | દ્દય "   |
|          | -    |   |   |   |     |   |   | The state of the s |

#### इति चतुष्पष्टिवृत्तानि निष्पद्यन्ते ॥

स्चना—अत्र ऊर्ध्वाकाराऽऽद्यपञ्चश्रेणीगतचतुष्कोणेषु यावत्पूरं पूर्ववत् क्रमेण , एकैकद्विद्विश्चतुश्चतुरष्टाष्ट्रपोडशपोडशगुरुलघुकमः । ऊर्ध्वाकारान्तिमश्रेणीगतचतुष्कोणेषु द्वात्रिशद्वात्रिशद्वुरुलघुकम इति विवेकः ॥

एवं प्रस्तारनिष्पादनक्रमः दिङ्मात्रं सृचितः । शेषास्त्वतिस्स्म-बुद्धिगोचराः भवन्तीति सर्वं शिवम् ॥

द्वितीयोऽनुबन्धः. गणितविधानेन वृत्तसंख्यानिर्णयः.

| छन्दस्संख्या | गणिततन्त्रम्   | गुणनकमः                        | फलितवृत्तसंख्या | गुण्यसंख्या-<br>स्चिकम् |
|--------------|----------------|--------------------------------|-----------------|-------------------------|
| 8            | (२) 9          | 8×3                            | 3               | ্ अ                     |
| २            | (२)२           | अ×२                            | 8               | आ                       |
| 3            | (२)३           | आ×२                            | 6               | To Y                    |
| 8            | (2)8           | इ×२                            | १६              | ंझ                      |
| ч            | (२)4           | $\xi \times \zeta$             | ३२              | उ                       |
| Ę            | (२)\$          | $3 \times 7$                   | €8              | ऊ                       |
| v            | (२)७           | ऊ×२                            | १२८             | 羽                       |
| ۷            | (२)८           | ऋ×२                            | २५६             | ऋ                       |
| 9            | (२)९           | ऋ×२                            | ५१२             | ऌ                       |
| १०           | (२)१०          | ऌ×२                            | १,०२४           | ॡ                       |
| ११           | (२)११          | ॡ×२                            | २,०४८           | ए                       |
| १२           | (२)१२          | $\mathbf{q} \times \mathbf{z}$ | ४,०९६           | प्रे                    |
| १३           | ( <b>२</b> )१३ | है×२                           | ८,१९२           | ओ                       |
| 88           | (२)9 ٢         | ओ×२                            | १६,३८४          | औ                       |
| १५           | (२)१५          | औ×२                            | ३२,७६८          | अं                      |
| १६           | (२)१६          | अं×२                           | ६५,५३६          | अ:                      |
| १७           | (२)१७          | अ:×२                           | १,३१,०७२        | क                       |
| १८           | (२)96          | क×२                            | २,६२,१४४        | Л                       |

| छन्द <del>स्</del> संख्या | गणिततन्त्रम् | गुणनक्रमः                      | फालितवृत्तसंख्या | गुण्यसंख्या. |
|---------------------------|--------------|--------------------------------|------------------|--------------|
| १९                        | (२)१९        | $\eta \times \gamma$           | 4,78,7८८         | च            |
| २०                        | (२)२०        | च×२                            | १०,४८,५७६        | <b>ज</b>     |
| २१                        | (२)२१        | ज $	imes$ २                    | २०,९७,१५२        | Σ            |
| २२                        | (२)२२        | $z \times z$                   | ४१,९४,३०४        | ड            |
| २३                        | (२)२३        | ड $	imes$ २                    | ८३,८८,६०८        | त            |
| २४                        | (2)28        | $a \times 2$                   | १,६७,७७,२१६      | द            |
| २५                        | (२)२'        | $\mathbf{c} \times \mathbf{c}$ | ३,३५,५४,४३२      | q            |
| २६                        | (२)२६        | $q \times \gamma$              | ६,७१,०८,८६४      | व            |
| संकलिताः                  |              |                                | अकारादि          | वकारान्ताः   |
| २६                        | (२)२६        |                                | १३.४२,१७,७२६     |              |

स्चना—सार्धत्रयोदराकोटिप्रायिकसंख्याकेषु वृत्तेषु सत्सु, सार्ध-रातप्रायिकवृत्तान्येव प्रसिद्धानि, रोपभूतानि, अप्रसिद्धा-नीति, अस्मद्दीभार्थमेतत् आधुनिकार्याणां प्रतिभासंकोचं घोषयति । तिववारणाय प्रतिभाराालिभिः नवनवानि वृत्तानि कल्पनीयानि, ग्रन्थेषु प्रयोक्तव्यानि च ॥

## तृतीयोऽनुबन्धः

#### वृत्तसंख्यया नष्टवृत्तस्वरूपनिर्धारः

यस्मिन् कस्मिन् वा छन्द्रसि जातानां वृत्तानां संख्यासु, या काचित् संख्या यदि निर्दिष्टा, तत्संख्याङ्कं द्वाभ्यां विभक्तं शक्यते चेत्, तदा तद्वनपादस्य प्रथमाक्षरम् लघुरिति उन्नेयम्। तथा विभक्तं न शक्यते चेत्, तस्याङ्कस्य उकं संकलस्य विभज्यते, एवं सति प्रथमाक्षरम् गुरुरिति उन्नेयम्। एवं विभागे । योऽङ्को लभ्यते. तमपि पूर्वक्रमानुसारेण विभज्य, द्वितीयाक्षरम् लघुर्वा गुरुर्वा भव-तीति निर्धारितव्यं । तृतीयचतुर्थाक्षरादिनिर्धारऽपि, अयमेव निय-मोऽनुसर्तव्यः। एतदुक्तं भवति-निर्दिष्टाङ्को वा पुनः पुनः अर्घार्धवि-भागेन लब्धाङ्को वा, द्वौ-चत्वारि-पद-अष्टलादि समाङ्को यदा भवति, तदा, वृत्तस्याक्षराणि लघूनि, अन्यथा स, एकः-त्रयः-पञ्च सप्तेत्यादि विषमाङ्कः यदा भवति, तदा तानि गुरुणि। एकमादाय अर्थीकरणं गुरोर्ज्ञापकं, एकमनादायैव अधींकरणं लघोर्ज्ञापकमिति विवेकः। यथा-प्रतिष्टाच्छन्दासि जातानां षोडशवृत्तानां मध्ये, पञ्चदशतमवृ-त्तस्य स्वरूपविवक्षायां, गणिततन्त्रमेवं भवति। निर्दिष्टवृत्तसंख्याङ्कः १५ विषमाङ्का भवति । अयं एकमनादाय अर्घीकर्तुं न शक्यः।अतः, तस्मिन एकेन संकलय्य अर्घोक्तं १५+१=१६÷२=८ इति समाङ्को लन्धः। तस्मात् प्रथमाक्षरं गुरुर्भवति (-)। अयं लन्धाङ्कः एकमनादाय ८÷२=४ इति अर्थीकर्तुं शक्यः। तस्मात् द्विती-याक्षरं, लघुर्भवति (७) । अयं लब्धाङ्कः पुनः एकमनादाय, ४÷२=२ इति अर्धीकर्तुं शक्यः। तस्मात् तृतीयाक्षरमपि लघुः (v)। अयमपि लब्धाङ्कः एकमनादायैव, २÷२=१ इति अर्धी-कर्तुं शक्यः। तस्मात् चतुर्थाक्षरमपि छघुः (०)। एवं, -००० इति भगणो लघुश्चेति पश्चद्शतमवृत्तपादस्वरूपं निर्धार्यते॥

तथा तस्मिन्नेव छन्दस्ति, प्रथमषोडशतमवृत्तयोः स्वरूपे एवं भवतः—

- (2)  $2+2=2\div 2=2$  प्रथमाश्चरम् (-)
- (3)  $8+8=3\div 8=8$  तृतीयाक्षरम् (-)

एवं सर्वगुरुः (---) अथवा मगणा गुरुश्च पादो भवति॥

- तथा (१) १६÷२=८ प्रथमाक्षरम् (०)
  - (२) ८÷२=४ द्वितोयाक्षरम् (०)
  - (३) ४÷२=२ तृतीयाक्षरम् (♥)
  - (४) २-२=१ चतुर्थाक्षरम् (०)

एवं सर्व लघुः (००००) अथवा नगणो लघुश्च पादः । तस्मिन्नेव छन्दासि चतुर्थोष्टमद्वादशतमवृत्तस्वरूपाणि यथा—

एवं ००-० सगणी लघुश्च।

सर्वत्र प्रथमेऽनुबन्धे निर्दिष्टे प्रतिष्ठाच्छन्दःप्रस्तारे परीक्षां-कृत्वा समाधातव्यं । एव अन्यत्र ॥

### चतुर्थो ऽनुबन्धः

### उद्दिष्टवृत्तस्वरूपज्ञानेन तद्दृत्तसंख्यानिर्णयः

यस्मिन् कस्मिन् छन्द्सि यस्य कस्य वा बुत्तस्य पादे विद्य-माने गुरुलघुस्वरूपे ज्ञाते, तच्छन्द्सि जातानां चृत्तानां संख्यासु मध्ये, तद्भुतं कतममिति निर्णयायदं लघुतन्त्रम् । प्रथमं तावत् बृत्तपादाक्षराणि सुविधादं विलिख्य, तेषामधः क्रमेण गुरुलच्चात्मक-पस्तारं विरचय्य, तेषामधस्तनेषु स्थानेषु क्रमशः एकाङ्कमारभ्य पूर्वपूर्वाङ्कद्विगुणितानङ्कान् यावदक्षरान्तं विलिखेत् । तत्कमस्तु— एकाङ्कविद्धं (१) प्रथमाक्षरस्याधः, तद्विगुणिताङ्कं द्वं (२) द्वितीया-क्षरस्याधः, तद्विगुणिताङ्कं चत्वारि ४) तृतीयाक्षरस्याधः, तद्वि-गुणिताङ्कमष्टौ (८) चतुर्थाक्षरस्याधः, तत्परतोषि एवमेव तत्तदक्षर-स्याधः समुचितानङ्कान्नियेशयेत् । ततः तत्र पादे यावन्तो लघवो-विद्यन्ते तेषामधस्थापितान् सर्वान् अङ्कान् सङ्कल्य्य एकमधिकं संयोजयेत् । एवंकृते, या संख्या लभ्यते, सेवोदिष्टवृत्तस्य संख्येति निर्णायत । यथा—प्रतिष्ठाच्छन्दासि षोडशवृत्तानि भवन्ति । तेषु, उद्दिष्टवृत्तं 'श्रीशं भजे' इति ॥

१ अत्र अक्षराणि — श्री रां भ जे प्रस्तारः — — v — पूर्वोक्तक्रमेण अङ्केषु १ २ ४ ८

इति निक्षिप्तेषु सत्सु, लघ्वक्षराध्यस्थसंख्या ४ चत्वारीति ज्ञायते। अधिकया, एकसंख्यया संयोजिता सा, ५ पञ्च भवति। अतः उद्दिष्टवृत्तं पञ्चमं भवति॥

२ तथा, गायत्री छन्दास चतुष्पिष्टवृत्तानि भवन्ति। तेषु 'नमस्ते गुरवे' ) इत्यत्र सर्वत्रघुसंख्यासङ्कलनाङ्कः, v = -v + v = -(2+c+1) शिक्षकमेकेन संयोजि-१२ ८ ८१६३२ ताङ्कः २५+1 = २६ भवति। अतः, इदं वृत्तं पर्डिशातितमं भवति॥

३ अप्याख्यपोडशाक्षरछन्दास, अनेन ग्रंथकत्री नवीन-

तया परिभावितं स्वकीयं स्तृतिकुलुमाञ्जल्याख्यग्रन्थे प्रयुक्तं गुण-भूषाख्यवृत्तं, अस्मिन् संद्भें नष्टोहिष्टतन्त्राभ्यां परीक्ष्य दढीकियते तद्यथा—वृत्तम् ॥

गिरिजेऽलं सुरजालं भज्ञते त्वाऽ सुरजालम् । १, २, ४, ८, १६, ३२, ६४, १२८, २५६, ५१२, १०२४, २०४८,४०५६, ८१९२, १६३८४, ३२७६८

सङ्गालितास्सर्वे लघ्यङ्काः १३,१०७ एकेन संयोजितोऽयं १३१०७+१=१३,१०८ भवति । अनेन तन्त्रेण इदं गुणभूषावृत्तं तच्छन्दसि १३,१०८ तमं भवतीति ज्ञायते ॥

इदानीमिदं वृत्तं तन्त्रान्तरेण परीक्ष्यते । यथा वृत्तसंख्या १३,१०८ इति पूर्वतन्त्रेण ज्ञातम् । इयमव निर्दिष्टा संख्या । वृत्त-स्वरूपमनया निर्धार्थते ॥

- (१) इयं समसंख्या, एकमधिकमनादायैव १३,१०८ $\div$ २= ६५५४ इति अर्धीकर्तुं शक्यते, अतः वृत्तपादस्य प्रथमाक्षरं लघुः ( $\circ$ ) ॥
  - (२) पुनः ६,५५४ ÷ २ = ३,२७७ इति द्वितीयाक्षरमपि लघुः(०)॥
- (३) इयं संख्या ३,२७७ विषमाङ्कान्तत्वात् एकमधिकं आदायैव ३२७७ + १ = ३२७८ ÷ २ = १६३९ इति अर्धाकर्तुं शक्या, अतः
  तृतीयाक्षरं गुरुः (-) तथा (४) १६३९ + १ = १६४० ÷ २ = ८२० इति
  चतुर्धाक्षरमिष गुरुः (-) । तथा (५) ८२० ÷ २ = ४१० छघुः ( $\upsilon$ )
  (६) ४२० ÷ २ = २०५ छघुः ( $\upsilon$ )। ( $\upsilon$ ) २०५+१ = २०६ ÷ २ = १०३ (-)
  ( $\upsilon$ ) २०३ + १ = १०३ ÷ २ = ५२ (-)। ( $\upsilon$ ) ५२ ÷ २ = २६ ( $\upsilon$ )।
  (१०) २६ ÷ २ = १३ ( $\upsilon$ )। (११) १३ + १ = १४ ÷ २ = ७ (-)।
  (१२) ७ + १ = ८ ÷ २ = ४ (-)। (१३) ४ ÷ २ = २ ( $\upsilon$ )। (१४) २ ÷
  २ = १ ( $\upsilon$ )। (१५) १ + १ = २ ÷ २ = १ (-)। (१६) १ + १ = २ ÷
  २ = १ ( $\upsilon$ )। एवं  $\upsilon$ 0 -  $\upsilon$ 0 -  $\upsilon$ 0 -  $\upsilon$ 0 -  $\upsilon$ 1 क्तं चत्तस्वकृषं ज्ञातं। एवं अन्योन्यतन्त्रपरीक्षया अष्ट्यां एतादशं वृत्तस्वकृषं ज्ञातं। तस्य नाम गुणभूषेति किवना सुविचार्यं कृतं भवति॥

### पश्चमोऽनुबन्धः.

#### यतिविचारः

पिङ्गलस्त्रम्—(६-१) 'यतिर्विच्छेदः' विच्छिद्यते विरम्यते पद्पाठोऽस्मिन्निति विच्छेदः । यतिशब्दस्याधिकरणव्युत्पत्या, समुद्राद्यनविच्छन्नेष्वक्षरेषु यतिः कर्तव्येत्ययमर्थस्मिध्यति । तत्रैषा यत्युपदेशोपनिपद्भवति । (उपनिषत्पौर्वाचार्यपारंपर्यसिद्धो नियमः)

यतिविषयकप्रमाणवचनानि

- १ यतिस्सर्वत्र पादान्ते
- २ स्टोकार्धे तु विशेषतः।
- ३ समुद्रादिपदान्ते च
- ४ व्यक्ताव्यक्तविभक्तके॥
- ५ कवित्तु पदमध्येऽपि समु-द्रादौ यतिर्भवेत् । यदि पूर्वापरौ भागौ न स्याता-मेकवर्णको ॥

पादान्तेऽस्य निषेधः।

कविश्रयोगाः

- " विशुद्धज्ञानदेहाय "
- "नमस्यामि सदोङ्<mark>तमन्थनीक्त-</mark> तमन्मथुम् ।"
- "यक्षश्चके जनकतन<u>या</u>स्नान-पुण्योदकेषु"
- "वशीकृतजगत्कालं कण्ठे कालं नमाम्यहम् । महाकालं कला-रेष्ट्रशिलेखाशिखामणिम्॥"
- "पर्याप्तं तप्तचा<u>मी</u>करकटकतटे शिष्टपीतेतरांशौ"

(प्रणमित भववन्धक्केशनाशाय नारायणचरणसरोजद्वन्द्वहे -तुम्। इत्यत्र) यतिविषयकप्रमाणवचनानि तथा पूर्वापरयोर्भागयोरेका-क्षरत्ये।

६ पूर्वान्तवत्स्वरसन्धौ

- ७ कचिदेव परादिवत् ।
  अस्यार्थः येयं पूर्वापरयोरेकादेशः स्वरसन्धौ विधीयते कचित्पूर्वस्यान्तवद्भवति कचित्परस्यादिवत् । तथा च पाणिनिः "अन्तादिवच्च" ।
- ८ द्रष्टब्यो यतिचिन्तायां यणा-देशः परादिवत् ।
- ९ नित्यं प्राक्पदसंबन्धाश्चाद-यः प्राक्पदान्तवत्। (तेभ्यः पूर्वा यतिर्न कर्तव्ये-त्यर्थः) पूर्वपदान्तवद्भावो मा भृत्।
- १० परेण नित्यसंबन्धाः प्राद-यश्च परादिवत् । तेभ्यः पूर्वा यतिर्न कर्तव्ये स्यर्थः ।

#### कांवप्रयोगाः

- (एतस्यागण्ड्न तलमनुदिनं गाह-ते चन्द्रकक्षां। इत्यत्र)
- " स्यादस्थानोपगतयमुनासंगमे-ध्याभिरामे । तथा—"दिका-लाद्यनवच्छिन्नाऽनुन्तचिन्मा -त्रमूर्तये ।"
- "स्कन्धो विन्ध्यादिबुध्या निक-पति महिषस्याहितोऽस्तं प्र-यास्यन्"। तथा — "शूलं शूलं तु गाढं प्रहर हर हृष्ीके-शकेशोपवक्रश्चकेणाकारि किं ते"—अत्र स्वरक्षपस्य परा-दिवद्भाव व्यंजनमपि तद्भक्त-रगत् तशादिवद्भवति॥
- "विततघनतुषारक्षेादशुभ्रांशुपू -र्णास्<u>व</u>विरलपदमालां इथाम-लामुाल्लेखन्त " इत्यादि ॥
- "स्वादु स्वच्छं सिललिमि च प्रीतये कस्य न स्यात्" "मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्यु-पेतार्थकामाः"
- "दुःखं में <u>प्रक्षि</u>पति हृद्यं दु-स्सहस्तद्वियोगः"

यतिविषयकप्रमाणवचनानि

#### कर्मप्रवचनेभ्यः परापि यथा स्यात् ।

कविप्रयोगाः

"प्रियं <u>प्रति</u> स्फुरत्पादे मन्दायन्ते न खल्विति । श्रयांसि बहुवि-झानि भवन्ति महतामपि "॥

#### कविकल्पलतायां

३ 'यतिभंगो नामघातुभागभेदाद्यथाभवेत्' एवञ्च पादान्ते धातुप्रातिपीदकयोरेकदशं गत्वा तदुत्तरपादादौ शिष्टाक्षरसंनिदेशाद्यतिभंगो भवेदित्यर्थः। खरसन्धौतु न । यथा—'श्रीक्षोऽस्तु-भूत्यै भवते' 'देवदेवजगन्नाथाऽभिवन्दे त्वां सनातिनं' इत्यत्र च यतिभन्नः न भवति। एकस्वरोपसर्गळक्षणत्वात्। स्वप्रकृत्यन्वयित्वेन, शाब्दबोधविषयत्वमेव श्रूयमाणविभक्तित्वं॥

४ तत्रैय—एकाक्षरोपसर्गेन विच्छेदः श्रुतिसौख्यहृत्। यथा यथोद्वेगः सुधियां नोपजायते, तथा तथा मधुरतानिमित्तं यतिरिष्यते॥

पदमध्येतु एकाक्षरस्यापि पूर्वान्तवद्भावा न यतिभङ्गकरः। यथा—जम्भारातीभकुम्भोदुत्यादौ। तथा चादीनामपि परादिवद्भा-बश्च। यथा—चाननानां चतुर्णामित्यत्र॥

- ५ यतिर्जिह्नेष्टविश्रामस्थानं कविभिरुच्यते । सा विच्छेद-विरामाद्यैः पदैर्वाच्या निजेच्छया । छन्दोमञ्जर्याम् ॥
- ६ यतिर्विच्छेदसंक्षिका (इति केदारपण्डितः) विच्छेदः पद-च्छेद इति संज्ञा यस्यास्सा ॥
  - ७ स्रोकेषु नियमस्थानं पदच्छदं यतिर्विदुः।(इति दण्डी)॥
- ८ धातुनाम्नामभेदेन विरामो विरितर्यतिः । स्वरसन्ध्याप्त-सौन्दर्यात्तद्भेदेपीष्यते कचित् । (इति पिंगलमुनिः ॥

# शुद्धा ऽशुद्ध प त्रि का.

| पुटः       | पङ्तिः | अग्रुदम्                 | गुदम्           |
|------------|--------|--------------------------|-----------------|
| v          | 16     | विद्यालय संस्कृत         | विद्यालयसंस्कृत |
| xiii       | 15     | तूर्णकम्                 | त्णकम्          |
| xiv        | 8      | (निशा                    | निशा (          |
| xvii       | 3      | सा                       | सा              |
| xviii      | 13     | ()                       | (v)             |
| xix        | 6      | कंचेति                   | कं चेति         |
| 4          | 16     |                          | <b>9</b>        |
| 5          | 3      | भरधाज                    | भरद्वाज         |
| 99         | ,,     | वसिष्टौ                  | वसिष्ठौ         |
| 25         | 19     | <b>.</b>                 |                 |
| 21         | 25     | घर्यः                    | धुर्यः          |
| 7          | 20     | धृवो                     | ध्रुवो          |
| ,,         | 24     | धृव                      | ध्रव            |
| 11         | 7      | सदा गति                  | सदागति          |
| ,,         | 11     | मावि                     | माऽऽवि          |
| 12         | 24     | वास्य                    | वाऽस्य          |
| 13         | 16     | शताश्रय                  | श्ताऽऽश्रय      |
| 14         | 3      | दाषः                     | दोषः .          |
| <b>5</b> 5 | 14     | वि <sup>श</sup> श्वंकमीऽ | वि अवं कर्माऽ   |
| 15         |        | प्रभयात्तम्              | प्रभयाऽऽत्तम्   |
| 19         | 13     | पजातिः                   | उपजातिः         |
| 20         | 3      | प्रकाशादि                | प्रकाशाऽऽदि     |
| ,,         | 4      | सदान्त                   | सदाऽन्त         |
| 24         |        | सत्यानृत                 | सत्याऽनृत       |
| 27         | 15     | वशा                      | वशा             |
| 30         | 12     |                          |                 |
|            | , 22   | परमात्मा                 | परमाऽऽत्मा      |
|            | , 25   | परात्मनि                 | पराऽऽत्मनि      |
| S          |        | 73                       |                 |

| पुट:       | पङ्तिः | अशुद्धम्             | गुद्धम्                 |
|------------|--------|----------------------|-------------------------|
| 31         | 4      | करुणाभय              | करुणाऽभय                |
| 25         | 5      | समतार्जव             | समताऽऽजीव               |
| 32         | 24     | नृपार्य              | नृपाऽर्य                |
| 34         | 3      | (0000.               | (000-0                  |
| 37         | 6      | दुर्गाष्ट्रमे        | दुर्गाऽष्टमे            |
| 25         | 19     | प्रजाना              | प्रजाना-                |
| 39         | 6      | कत्रा                | कर्जा                   |
| <b>5</b> 9 | 18     |                      |                         |
| 11         | 25     | देवाद्य              | देवाऽऽद्य               |
| 40         | 1      | पदाद्य               | पदाऽऽद्य                |
| ,,         | 3      | दैवात्म              | दैवाऽऽत्म               |
| ,,         | 17     | कास्यार्थ            | काम्याऽर्थ              |
| 42         | 7      | विजयाद्य             | विजयाऽऽद्य              |
| 19         | 14     | नरामर                | नराऽमर                  |
| ,,,        | 21     | सहत्वां              | सह त्वां                |
| 9,         | 24     | प्रियात्म            | प्रियाऽऽत्म             |
| 44         | 27     | पदयाः                | पद्योः                  |
| 46         | 4      | विष्फ्जिंतम्         | विस्फूर्जितम्           |
| 57         | 5      | विष्फूर्जितम्        | विस्फ़्रजिंतम्          |
| 48         | 14     | सान्निध्याप्ताः      | सान्निध्याऽऽप्ताः       |
| 51         | 11     | सुप्रीवाकांक्षा      | सुत्रीवाऽऽकांक्षा       |
| 59         | 14     | मायातीते             | मायाऽतीते               |
| ,,,        | 21     | कायापेते             | कायाऽपेते               |
| ,,         | 16     | सत्यन्नानानन्तानन्दे | सत्यज्ञानाऽनन्ताऽऽनन्दे |
| **         | 18     | न . ज                | नगण                     |
| 53         | 21     | जायेतास्यां          | जायेताऽस्यां            |
| 29         | 23     | शमय                  | शममय                    |
| 54         | 20     | gi                   | पुर्यो .                |
| 55         | 14     | श्रेणी संख्या        | श्रेणीसंख्या            |
|            |        | changes              |                         |

Sanskrit Lit -

chandas